बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 4

नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की रूपरेखा

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..1
दिशा-निर्धारण 2
द्विरूपीय प्रकाशन 2
धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ...3
मूलभूत स्तर की संरचनाएँ 3
मध्य स्तर की सरंचनाएँ...4
जटिल स्तर की संरचनाएँ..5
ऐतिहासिक विकास 5
ऐतिहासिक चरित्र 6
रूकावटें..6
नई दिशा...7
युगांत-विज्ञान में विकास..8
पारंपरिक 9
पुराना नियम...9
आदम 10
नूह...10
अब्राहम...11
मूसा 11
दाऊद..12
आरंभिक मसीही युगांत-विज्ञान...14
पहली सदी का यहूदी धर्म 15
यूहन्ना और यीशु...15
नए नियम का युगांत-विज्ञान...18
महत्व 18
मसीह-विज्ञान 20
विधिवत धर्मविज्ञान..20
बाइबल आधारित धर्मविज्ञान..20
उद्धार-विज्ञान...22
विधिवत धर्मविज्ञान..22
बाइबल आधारित धर्मविज्ञान..23
उपसंहार...25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिचय

मेरा एक मित्र है उसने एक लंबी यात्रा के दौरान पढ़ने के लिए पुरानी पुस्तकों की दुकान से एक पुरानी पुस्तक खरीदी। उसने मुझसे कहा कि एक सप्ताह से भी अधिक उसके हाथ में रखा वह फटा हुआ उपन्यास उसका घनिष्ठ सहयात्री रहा; वह उसे पढ़े बिना रह न सका। मैंने अपने मित्र से पूछा कि फिर तो उसे वह पुस्तक वास्तव में बहुत अच्छी लगी होगी। और उसने उत्तर दिया, "हाँ, मुझे अच्छी लगी, परंतु जब मैं उसके अंतिम पृष्ठ की ओर मुड़ा,तो मैंने पाया कि किसी ने इसके अंतिम पृष्ठ को फाड़ दिया था। मैं बहुत ही निराश हो गया।" उसने कहा, "अपने घर पहुँचने के बाद जब तक मैंने नई पुस्तक खरीद कर पढ़ नहीं ली तब तक मुझे पता नहीं चल पाया कि कहानी कैसे समाप्त हुई।" मेरा मानना है कि तब बड़ी निराशा होती है जब आप एक अच्छे उपन्यास को पढ़ने के लिए समय निकालते हैं और अंत में यह पाते हैं कि इसका अंतिम पृष्ठ तो है ही नहीं।

कई रूपों में, बाइबल के साथ भी ऐसा ही होता है। हम यह जाने बिना कि इसका अंत कैसे होगा, बाइबल के आरंभिक हिस्सों को पढ़ने से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। परंतु यदि हम बाइबल के अंतिम भाग, अर्थात् नए नियम का अध्ययन न करें, तो यह उपन्यास के अंतिम पृष्ठ को न पढ़ने जैसा ही होगा। पुराना नियम प्रश्नों, समस्याओं और आशाओं को सामने रखता है, परंतु उत्तर, समाधान और पूर्णताएँ पवित्रशास्त्र के अंत में, अर्थात् नए नियम में पाई जाती हैं।

यह बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना की हमारी श्रृंखला का चौथा अध्याय है। हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की रूपरेखा।" और इस अध्याय में हम पवित्रशास्त्र की कहानी के अंत, अर्थात् नए नियम में परमेश्वर के प्रकाशन की पूर्णता के प्रति बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की कुछ आधारभूत विशेषताओं को देखेंगे।

हमने इस श्रृंखला में अब तक जो देखा है उसकी समीक्षा करने में हमें कुछ समय व्यतीत करना चाहिए। हमने ध्यान दिया है कि मसीहियों ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के लिए तीन मुख्य रणनीतियों का प्रयोग करने में रूचि दिखाई है, वे हैं : साहित्यिक विश्लेषण, अर्थात् बाइबल को एक साहित्यिक चित्रण के रूप में देखना जिसकी रचना कुछ दृष्टिकोणों को दर्शाने के लिए की गई है; विषयात्मक विश्लेषण, अर्थात् पवित्रशास्त्र को एक दर्पण के रूप में देखना जो हमारे समकालिक या पारंपरिक विषयों या प्रश्नों को प्रतिबिंबित करता है; और ऐतिहासिक विश्लेषण, बाइबल को उन ऐतिहासिक घटनाओं की खिड़की के रूप में देखना जिनकी यह जानकारी देती है। जब कभी हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते हैं, तो हम सदैव इन तीनों दृष्टिकोणो का प्रयोग करते हैं, परंतु बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का अध्ययन-संकाय पवित्रशास्त्र के ऐतिहासिक विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करते हुए बाइबल को मुख्य रूप से एक खिड़की के रूप में देखता है, और यह विशेष रूप से उन तरीकों को देखता है जिनमें परमेश्वर बाइबल में बताई गईं ऐतिहासिक घटनाओं में सम्मिलित था। इसी कारण, हमने बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के अध्ययन संकाय को इस प्रकार परिभाषित किया :

> बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र में उल्लिखित परमेश्वर के कार्यों के ऐतिहासिक विश्लेषण से लिया गया धर्मवैज्ञानिक चिंतन है।

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान इतिहास में परमेश्वर की सहभागिता के पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले विवरणों पर ध्यान केंद्रित करता है और इन घटनाओं से मसीही धर्मविज्ञान के लिए निष्कर्षों को निकालता है।

इस श्रृंखला के पिछले दो अध्यायों में, हमने उन तरीकों को देखा जिनमें बाइबल के धर्मविज्ञानी पुराने नियम के साथ व्यवहार करते हैं। इस अध्याय में, हमारा विषय नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की रूपरेखा है। जैसा कि हम देखेंगे, उन तरीकों के बीच बहुत ही समानता है जिनमें बाइबल आधारित धर्मविज्ञान नए और पुराने नियम से व्यवहार करता है, परंतु साथ ही महत्वपूर्ण विभिन्नताएँ भी हैं।

हमारा अध्याय तीन मुख्य विषयों पर केंद्रित रहेगा। पहला, हम अपने विषय के प्रति एक दिशा-निर्धारण को प्राप्त करेंगे। दूसरा, हम युगांत-विज्ञान या अंतिम दिनों के विषय में बाइबल की शिक्षा के विकास को देखेंगे, जो कि नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में एक महत्वपूर्ण विषय है। और तीसरा, हम यह पता लगाएँगे कि बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने नए नियम के युगांत-विज्ञान को कैसे देखा है। आइए हम अपने विषय के प्रति एक मूलभूत दिशा-निर्धारण के साथ आरंभ करें।

दिशा-निर्धारण

नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के केंद्र तक पहुँचने का एक सर्वोत्तम तरीका इसकी तुलना उससे करना है जो हमने इस श्रृंखला में पुराने नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के विषय में सीखा है। पहला, हम इस वास्तविकता को देखेंगे कि पुराने नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान और नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान दोनों की परमेश्वर के द्विरूपीय प्रकाशन में साझी रूचि है। दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे दोनों अध्ययन पद्धतियों ने उसे समझ लिया है जिसे हमने धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ कहा है। और तीसरा, हम इस बात की खोज करेंगे कि इनमें से प्रत्येक ने ऐतिहासिक विकास पर कितना ध्यान दिया हैं। आइए पहले द्विरूपीय प्रकाशन को देखें।

द्विरूपीय प्रकाशन

आपको याद होगा कि परमेश्वर ने पुराने नियम में स्वयं को दो मुख्य रूपों में प्रकट किया था : कार्य प्रकाशनों और वचन प्रकाशनों के द्वारा। प्रकाशन की इस द्विरूपीय अवधारणा ने नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को भी चित्रित किया है। एक ओर, नया नियम परमेश्वर के बहुत से प्रकाशनात्मक कार्यों का वर्णन करता है, जैसे कि मसीह की पृथ्वी पर की सेवकाई, और पहली सदी की कलीसिया में पवित्र आत्मा की सेवकाई। साथ ही यह परमेश्वर के उन कार्यों की भविष्यद्वाणी भी करता है जो भविष्य में घटित होंगे, जैसे मसीह का महिमामय पुनरागमन। परंतु दूसरी ओर, नया नियम परमेश्वर के कार्यों से जुड़े हुए वचन प्रकाशनों का वर्णन भी करता है, जैसे पिता परमेश्वर ने कहा; मसीह ने भी, और कभी-कभी स्वर्गदूतों और मनुष्यों ने भी, परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कहा और परमेश्वर के वचन को भी प्रकट किया।

इसी कारण नए नियम के ऐतिहासिक विवरण नए नियम में यीशु, प्रेरितों और अन्य मसीहियों के कार्यों और वचनों का उल्लेख करते हैं, क्योंकि परमेश्वर स्वयं को उनके कार्यों और उनके वचनों के द्वारा प्रकट करता है। यह न केवल नए नियम के ऐतिहासिक विवरणों के भागों पर लागू होता है, बल्कि यह पत्रियों पर भी लागू होता है। वे कभी-कभी परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर के कार्यों की ओर संकेत करती हैं और वे परमेश्वर के वचन को उसके लोगों तक पहुँचाती हैं।

आपको याद होगा कि पुराने नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने भी कार्य और वचन प्रकाशनों के क्षणिक संबंधों की ओर ध्यान आकर्षित किया था। परमेश्वर के कुछ कार्य बाद के वचन प्रकाशनों से पहले आए, कुछ समकालीन वचन प्रकाशनों से जुड़े थे, और कुछ अन्य वचन प्रकाशनों के बाद आए।

बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने दर्शाया है कि नए नियम में सभी तीनों प्रकार के वचन प्रकाशन भी पाए जाते हैं। सुसमाचार दर्शाते हैं कि यीशु के आरंभिक कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए परमेश्वर ने यीशु के वचनों के द्वारा बात की। वे उन समयों का भी उल्लेख करते हैं जब यीशु की शिक्षाओं ने उसके समकालीन कार्यों को स्पष्ट किया, और साथ ही साथ उन समयों को भी जब यीशु ने भविष्य के कार्यों की भविष्यद्वाणी की। यही बात प्रेरितों के काम और प्रकाशितवाक्य तथा नए नियम की पत्रियों के लेखकों और चरित्रों के बारे में भी कही जा सकती है। पूरे नए नियम में परमेश्वर ने अपने कार्यों और वचनों के बीच के परस्पर संबंधों के द्वारा स्वयं को प्रकट किया है।

अपने पुराने नियम के समकक्ष धर्मविज्ञानियों के समान नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने भी उन द्विरूपीय तरीके की ओर ध्यान आकर्षित किया है, जिसमें परमेश्वर ने स्वयं को प्रकट किया है। पुराने और नए नियम का बाइबल आधारित धर्मविज्ञान परमेश्वर के कार्य और वचन दोनों प्रकार के प्रकाशनों पर ध्यान केंद्रित करता है।

धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ

परमेश्वर के कार्य और वचन प्रकाशनों पर ध्यान केंद्रित करने के अतिरिक्त, पुराने नियम और नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के समान विचारों को साझा करते हैं। आपको याद होगा कि पुराने नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों ने परमेश्वर के कार्य और वचन प्रकाशनों के परस्पर संबंध रखने के कई तरीकों पर ध्यान देने के द्वारा धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को पहचाना था। उन्होंने परमेश्वर से जो कहा और किया के बीच के तार्किक संबंधों की ओर ध्यान दिया। ये सरंचनाएँ बहुत ही मूलभूत से लेकर काफी जटिल व्यवस्थाओं तक फैली थीं और नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने नए नियम में इसी प्रकार की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को देखा है।

पुराने नियम के धर्मविज्ञान के अपने पहले के विचार-विमर्श की पद्धति का अनुसरण करते हुए, हम नए नियम के धर्मविज्ञान में धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के तीन स्तरों पर ध्यान देंगे : पहला, मूलभूत स्तर की संरचनाओं का एक उदाहरण; दूसरा, मध्य स्तर की संरचनाओं का एक उदाहरण; और तीसरा, जटिल स्तर की संरचनाओं का एक उदाहरण। आइए पहले नए नियम की मूलभूत स्तर की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं पर विचार करें।

मूलभूत स्तर की संरचनाएँ

मूलभूत स्तर की धर्मवैज्ञानिक सरंचनाएँ नए नियम में ईश्वरीय प्रकाशनों के अपेक्षाकृत सरल तार्किक परस्पर संबंधों में प्रकट होती हैं। ईश्वरीय शब्द परमेश्वर के कार्यों को स्पष्ट करते हैं; परमेश्वर के विशिष्ट कार्य उसके शब्दों के अर्थों को स्पष्ट करते हैं। विभिन्न कार्य प्रकाशन भी एक दूसरे के साथ तार्किक रूप से जुड़ते हैं; और विभिन्न वचन प्रकाशन भी एक दूसरे के साथ संबंध रखते हैं। जब इस तरह की तार्किक सरंचनाएँ छोटे स्तर पर प्रकट होती है, तो वे उसकी रचना करती हैं जिसे हमने मूलभूत स्तर की धर्मवैज्ञानिक सरंचना या दृष्टिकोण कहा है।

उदाहरण के रूप में, मत्ती 2:1-12 में मत्ती ने बताया कि कैसे यीशु के जन्म में परमेश्वर के कार्य अन्यजाति के ज्योतिषियों के कार्यों और शब्दों के साथ परस्पर संबंधित हुए। इस संसार में यीशु के जन्म की घोषणा आकाश के एक तारे के द्वारा की गई थी। ज्योतिषी समझ गए थे कि इस तारे ने एक नए राजा के जन्म की घोषणा की है, और उन्होंने नए राजा की खोज में इस तारे का अनुसरण करते हुए बहुत से महीने, या हो सकता है कि दो वर्षों तक का समय व्यतीत किया। और जब वे अंततः उस बच्चे के पास पहुँचे, तो उन्होंने उसकी आराधना की। मत्ती के विवरण ने यीशु के जन्म के सच्चे धर्मवैज्ञानिक महत्व के

स्पष्ट दृष्टिकोण की ओर संकेत किया है : यीशु इस्राएल का बहुप्रतीक्षित राजा था जिसकी इन अन्यजातियों ने आराधना की।

इसके साथ-साथ, मत्ती 2:16-18 में सुसमाचार लेखक ने यीशु के जन्म के साथ राजा हेरोदेस के कार्यों और शब्दों के तार्किक संबंधों पर ध्यान देते हुए एक और धर्मवैज्ञानिक सरंचना की रचना की। ज्योतिषियों ने हेरोदेस को तब बताया जब मसीहा का जन्म हो गया था और उसके सलाहकारों ने उसे बताया कि कैसे पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की गई थी कि मसीहा का जन्म बैतलहम में होगा। यीशु को मार डालने के प्रयास में हेरोदेस ने आदेश दिया कि बैतलहम के दो वर्ष और उससे छोटे प्रत्येक बच्चे को मार डाला जाए। मत्ती ने तब परमेश्वर के दंड के रूप में हेरोदेस की भयानक मृत्यु का वर्णन किया।

इन कार्यों और शब्दों के मत्ती द्वारा दिखाए गए संबंध ने एक ऐसी धर्मवैज्ञानिक सरंचना की रचना की जिसने यीशु के जन्म के एक और दृष्टिकोण की ओर संकेत किया : यीशु इस्राएल का बहुप्रतीक्षित राजा था जिसे हेरोदेस ने मार डालने का प्रयास किया। मत्ती के विवरण में, धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के इन दो समूहों ने एक दूसरे के साथ एक असाधारण विपरीतता की रचना की, और फलस्वरूप एक ऐसे विषय के प्रति योगदान दिया जो इस पुस्तक में बहुत बार प्रकट होता है। यीशु के जन्म के प्रति हेरोदेस की प्रतिक्रिया ने इस तथ्य का पूर्वाभास कराया कि इस्राएल के बहुत से लोग मसीहा के रूप में यीशु का इनकार करेंगे और यहाँ तक कि उसे मार डालने का प्रयास करेंगे। फिर भी, इसके विपरीत यीशु के जन्म के प्रति ज्योतिषियों की प्रतिक्रिया ने इस तथ्य का पूर्वाभास कराया कि अन्यजातियों के बहुत से लोग यहूदियों के प्रतिज्ञात राजा का स्वागत करेंगे और बड़ी भक्ति और आनन्द के साथ उसकी आराधना करेंगे।

नए नियम की कई मूलभूत स्तर की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को देख लेने के बाद, आइए हम कुछ ऐसे उदाहरणों को देखें जिन्हें हम मध्य स्तर की धर्मवैज्ञानिक सरंचनाएँ कह सकते हैं।

मध्य स्तर की सरंचनाएँ

जब हम मूलभूत स्तर की बहुसंख्यक धर्मवैज्ञानिक सरंचनाओं को समाहित करने के लिए अपने दृष्टिकोण को विस्तृत करते हैं, तो हम अक्सर यह देखते हैं कि वे व्यापक तथा और अधिक जटिल धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण की रचना करती हैं। इन नियंत्रित रूप से जटिल धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की एक सबसे महत्वपूर्ण विशेषता नए नियम के धर्मविज्ञान का वाचाई रूप में व्यवस्थित होना है।

उदाहरण के लिए, हम मत्ती के सुसमाचार से लेकर यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य तक की संकलित पुस्तकों को “नया नियम” कहते हैं। यहाँ पर शब्द “नियम” का प्रयोग “वाचा” के पर्यायवाची के रूप में किया गया है। हम बाइबल के इस भाग को नया नियम इसलिए कहते हैं क्योंकि यह उस नई वाचा के साथ जुड़ा हुआ है जिसकी भविष्यद्वाणी पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने की थी। पुराने नियम के बहुत से भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की थी कि इस्राएल के निर्वासन के बाद परमेश्वर इस्राएल के लोगों के साथ एक अंतिम वाचा को स्थापित करेगा। यशायाह 54:10 और यहेजकेल 34:25 और 37:26 ने इस वाचा को “शान्ति की वाचा” के रूप में दर्शाया है। यिर्मयाह 31:31 इसी वाचा को “नई वाचा” के रूप में दर्शाता है।

नई वाचा के साथ संबंधित मध्य स्तर की धर्मवैज्ञानिक सरंचनाएँ नए नियम के धर्मविज्ञान में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। आपको याद होगा कि हमने देखा था कि पुराने नियम की वाचाओं ने कैसे ईश्वरीय परोपकारिता, मनुष्य की विश्वासयोग्यता और आशीषों और श्रापों के परिणामों की सक्रियता के आधार पर पुराने नियम के अधिकाँश धर्मविज्ञान को संगठित किया था। लगभग इसी तरह से, इन चार सक्रियताओं ने नई वाचा में जीवन को संचालित किया और नए नियम में धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों के बहुत से विशाल समूहों के तार्किक संबंधों को संगठित किया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जटिल स्तर की संरचनाएँ

सभी तरह की मूलभूत और मध्य स्तर की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के अतिरिक्त, नया नियम बहुत सी जटिल स्तर की संरचनाओं को भी प्रस्तुत करता है। जैसे कि हम इस श्रृंखला के पुराने नियम पर आधारित हमारे अध्याय से अपेक्षा कर सकते हैं, नए नियम की सबसे जटिल और व्यापक धर्मवैज्ञानिक संरचना है, परमेश्वर का राज्य, अर्थात् पृथ्वी के पाप की भ्रष्टता से परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति और शासन में परिवर्तन के रूप में इतिहास के लक्ष्य पर बाइबल का दृष्टिकोण। आइए नए नियम के इस बहुत ही जटिल धर्मवैज्ञानिक संरचना की रूपरेखा को चित्रित करें।

नए नियम के आरंभ में ही, यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु ने घोषणा कर दी थी कि परमेश्वर का राज्य निकट था। यीशु के प्रचार और उसकी शिक्षा ने निरंतर परमेश्वर के राज्य का उल्लेख किया। वास्तव में, यीशु के सुसमाचार के संदेश को अक्सर "राज्य का शुभ संदेश" कहा जाता है। जैसा कि हम मत्ती 4:23, 9:35 और 24:14, और साथ ही लूका 4:43, 8:1, 16:16 और प्रेरितों के काम 8:12 जैसे स्थानों में पढ़ते हैं।

पुराने नियम के लेखकों के साथ-साथ यीशु और नए नियम के लेखकों का भी यह मानना था कि आरंभ से ही इतिहास का लक्ष्य परमेश्वर के पवित्र स्वरूपों के द्वारा संपूर्ण पृथ्वी पर उसके राज्य की स्थापना के द्वारा परमेश्वर को महिमा प्रदान करना था। वे आश्वस्त थे कि मसीह के पहले आगमन में परमेश्वर के कार्य ने परमेश्वर के विश्वव्यापी राज्य के अंतिम चरण को आरंभ कर दिया था और इस बात के प्रति भी आश्वस्त थे कि अंततः मसीह, अर्थात् परमेश्वर के सबसे पवित्र स्वरूप के आगमन पर पूरी पृथ्वी परमेश्वर के राज्य में परिवर्तित हो जाएगी। हम इस आशा को प्रकाशितवाक्य 11:15 में पढ़ते हैं :

> "जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।" (प्रकाशितवाक्य 11:15)

जैसा कि हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, परमेश्वर के राज्य का धर्मविज्ञान नए नियम के धर्मविज्ञान के प्रत्येक पहलू को ध्यान में रखता है। पूरे नए नियम की स्पष्ट पद्धति को मसीह के द्वारा इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के आगमन के शीर्षक के तले सारगर्भित किया जा सकता है।

अतः हम देखते हैं कि नए नियम का बाइबल का धर्मविज्ञान कार्य और वचन प्रकाशनों के अपने केंद्र, और धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की अपनी पहचान में पुराने नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान से बहुत मिलता-जुलता है। परंतु इन समानताओं के बावजूद भी हमें एक मुख्य विपरीतता के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है : वे रूप जिनमें नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने ऐतिहासिक विकास के साथ व्यवहार किया है।

ऐतिहासिक विकास

हम बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के इस पहलू को तीन विषयों को स्पर्श करते हुए देखेंगे। पहला, नए नियम के धर्मविज्ञान का ऐतिहासिक चरित्र; दूसरा, नए नियम के ऐतिहासिक अध्ययन में रुकावटें; और तीसरा एक नई दिशा जिस पर नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने ऐतिहासिक विश्लेषण की अपेक्षा बल दिया है। आइए पहले नए नियम में धर्मवैज्ञानिक विकासक्रमों के ऐतिहासिक चरित्र पर ध्यान दें।

ऐतिहासिक चरित्र

हमारे पिछले अध्यायों में हमने देखा कि उन तरीकों पर बहुत ध्यान दिया गया है जिनमें पुराने नियम का धर्मविज्ञान समय के साथ-साथ विकसित हुआ। हर बार जब परमेश्वर ने इतिहास में कार्य करने और बोलने के द्वारा स्वयं को किसी न किसी स्तर पर और अधिक प्रकट किया, तो उसके नए प्रकाशनों ने पहले से विद्यमान धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को नया रूप दिया।

नए नियम के इतिहास के साथ भी ऐसा ही है। जैसे जैसे नए नियम का इतिहास आगे की ओर बढ़ा, तो धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ ऐतिहासिक परिवर्तनों से होकर गईं। उदाहरण के लिए, पुराने नियम की अवधि के अंत में, भविष्वक्ताओं के द्वारा आए परमेश्वर के वचन ने परमेश्वर की उन आगामी आशीषों की अपेक्षा की जब इस्राएल बंधुआई से लौटेगा। जब मसीह प्रकट हुआ तो बंधुआई से लौटने के ये धर्मवैज्ञानिक विषय इस समझ में परिवर्तित हुए कि परमेश्वर ने कैसे मसीह में इन आशीषों को उंडेलना आरंभ किया था। मसीह की पृथ्वी पर की सेवकाई उसके क्रूसीकरण में पाप की अनंत क्षमा की आशा को ले आई; उसने पुनरूत्थान की पुराने नियम की आशा को अपने पुनरुत्थान में नए जीवन में पूरा किया; और उसके स्वर्गारोहण ने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बताए गए पवित्र आत्मा के उंडेले जाने को पूरा किया। यही नहीं, जब प्रेरितों ने मसीह के कार्य को निरंतर जारी रखा, तो बंधुआई के बाद अन्यजातियों तक परमेश्वर की दया को पहुँचाने की पुराने नियम की आशा सुसमाचार के विस्तार के द्वारा एक वास्तविकता बन गई। और निस्संदेह, मसीह के महिमामय आगमन की नए नियम की भविष्द्वाणियों ने उस दिन की ओर संकेत किया जब एक पूरी तरह से नई सृष्टि की पुराने नियम की आशाएँ मसीह में पूरी होंगी।

रूकावटें

इस तरह के ऐतिहासिक धर्मवैज्ञानिक विकास नए नियम की अवधियों में प्रकट होते हैं, परंतु नए नियम का इतिहास व्यापक ऐतिहासिक विश्लेषण के प्रति कम से कम तीन मुख्य रुकावटों को प्रस्तुत करता है। पहली, पुराने नियम के साथ तुलना करने पर नया नियम इतिहास की एक बहुत ही छोटी अवधि को प्रस्तुत करता है। एक क्षण के लिए पुराने और नए नियमों के इतिहास की लंबाई की तुलना करें। उत्पत्ति के पहले ग्यारह अध्यायों के इतिहास से पूर्व के दिनों को यदि शामिल न करें तो पुराने नियम का इतिहास लगभग 1600 वर्षों के इतिहास को समाहित करता है जो लगभग 2000 ई.पू. में रहने वाले अब्राहम से लेकर लगभग 400 ई.पू. में रहने वाले अंतिम भविष्यद्वक्ता तक रहा। नए नियम का इतिहास बहुत छोटा है। संपूर्ण नया नियम इतिहास के लगभग 100 वर्षों को ही प्रस्तुत करता है। यद्यपि नया नियम इतिहास की अब तक की सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना, अर्थात् मसीह की पृथ्वी पर की सेवकाई, को दर्शाता है, फिर भी यह उस अवधि में होने वाली मुख्य ऐतिहासिक घटनाओं के पर्याप्त इतिहास को समाहित नहीं करता है।

दूसरी, नए नियम की बहुत सी परिस्थितियाँ एक दूसरे से बहुत मिलती-जुलती हैं। इसके विपरीत, पुराना नियम अपने इतिहास में बहुत सी भिन्न-भिन्न परिस्थितियों को प्रस्तुत करता है। कुलपतियों की अवधि में परमेश्वर के लोग कनान में अर्द्ध-खानाबदोश लोग थे। फिर वे मिस्र में गुलाम थे। इसके बाद वे मूसा के नेतृत्व में एक नई जाति बन गए। और उसके बाद, उन्होंने न्यायियों की अवधि के दौरान कनान पर विजय प्राप्त की। उनकी परिस्थितियाँ फिर बदलीं जब इस्राएल के आरंभिक राजतंत्र ने राष्ट्र को राजकीय वैभव की ओर बढ़ाया, और एक बार फिर से जब बाद के राजा और अगुवे आज्ञाकारिता और विद्रोह के बीच लहराते रहे। उनकी स्थिति उस समय और खराब हो गई जब परमेश्वर ने उन्हें निर्वासन में भेज दिया। और इसमें तब सुधार आया जब उसने अंततः निर्वासन में से प्रतिज्ञा की भूमि में लौटने वालों के द्वारा राज्य की पुनर्स्थापना करनी आरंभ की।

जब परमेश्वर के लोग इन विभिन्न परिस्थितियों में से होकर गए, तो उसने ऐसे रूपों में कार्य किया और उनसे बात की जो उनकी परिस्थितियों के अनुसार सही थे, इस प्रकार उसने स्वयं को उनकी आवश्यकता के अनुसार ढाला। इस्राएल की परिस्थितियों के प्रति ऐसे ऐतिहासिक अनुकूलनों ने पुराने नियम के धर्मवैज्ञानिक विकास में काफी विविधता को उत्पन्न किया।

फिर भी, तुलनात्मक रूप से परमेश्वर के लोगों की परिस्थितियाँ नए नियम के इतिहास के दौरान काफी अनुकूल रहीं। निश्चित रूप से, परस्थितियाँ पहले जैसी नहीं रहीं। यीशु, प्रेरित और कलीसिया ने विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के लोगों से व्यवहार किया और परमेश्वर के प्रकाशन ने इन विभिन्नताओं को समाहित किया। फिर भी, इतिहास के इस संपूर्ण समय में आरंभिक मसीहियों ने वैसे बड़े परिवर्तनों का सामना नहीं किया जैसे पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के साथ हुए थे। नए नियम में, मसीहियों को नियमित रूप से तुच्छ समझा गया और उन्हें प्रताड़ित किया गया। उन्होंने भरपूर संपन्नता और भयानक गरीबी के समयों का अनुभव नहीं किया। उनका बड़ी संख्या में एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन नहीं हुआ। न ही उन्होंने व्यापक रूप से आज्ञाकारिता और अवज्ञाकारिता की अवधियों का अनुभव किया। इसके फलस्वरूप, नए नियम में उल्लिखित परमेश्वर के प्रकाशनों ने उतनी विविध परिस्थितियों को समाहित नहीं किया जितनी पुराने नियम के प्रकाशनों ने किया था। और इस स्थिरता ने नए नियम के धर्मविज्ञान में ऐतिहासिक विकास को महत्वपूर्ण बना दिया है।

तीसरी, पुराने नियम के विपरीत, नया नियम केवल एक ही ईश्वरीय वाचा को दर्शाता है। जैसा कि हम देख चुके हैं, पुराने नियम की वाचाओं ने धर्मविज्ञान में मुख्य युग-संबंधी परिवर्तनों को दर्शाया था। आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ बाँधी गई वाचाएँ एक दूसरे से काफी भिन्न थीं। और फलस्वरूप, जब इतिहास इन प्रत्येक वाचाई अवधियों से होकर आगे बढ़ा तो बहुत ही महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक परिवर्तन हुए।

इसके विपरीत, नया नियम केवल एक वाचा, अर्थात् मसीह में नई वाचा, को प्रस्तुत करता है। यह वाचा तब प्रकट होना आरंभ हुई जब नए नियम का इतिहास मसीह के पहले आगमन से कलीसिया के इतिहास में आगे बढ़ा। और इतिहास की यह पूरी अवधि ईश्वरीय परोपकारिता, मनुष्य की विश्वासयोग्यता और केवल एक वाचा की आशीषों और श्रापों के परिणामों के प्रभावों द्वारा चित्रित थी। नए नियम में बहुत सी वाचाओं की अनुपस्थिति ने भी नए नियम में ऐतिहासिक विकास के महत्व को कम कर दिया।

नई दिशा

क्योंकि नए नियम के इतिहास में ऐतिहासिक परिवर्तन उतने नाटकीय नहीं थे जितने पुराने नियम के थे, इसलिए नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने अपने ध्यान को एक नई दिशा की ओर मोड़ा है। विभिन्न ऐतिहासिक अवधियों पर ध्यान केंद्रित करने की अपेक्षा, उनका झुकाव नए नियम के इतिहास के साथ एक संपूर्ण अवधि के रूप में कार्य करने की ओर रहा है।

अब, जैसा कि हमने कहा है, नए नियम में ऐतिहासिक विकास हुए हैं। यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई, कलीसिया के इतिहास और मसीह के महिमा में पुनरागमन के बीच महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। फिर भी, यह कहना उचित होगा कि नया नियम इन विकासक्रमों के साथ एकीकृत रूप में, अर्थात् मसीह और उसके कार्य की एक तस्वीर के रूप में व्यवहार करने की प्रवृति रखता है। उदाहरण के लिए, सुसमाचार हमें न केवल यीशु के जीवन के बारे में बताते हैं, बल्कि यीशु के प्रस्थान के बाद निरंतर चलने वाली सेवकाई का उल्लेख भी बहुत बार करते हैं, और साथ ही महिमा में उसके पुनरागमन के बारे में भी बताते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक और पत्रियाँ केवल यीशु की सेवकाई के बाद हुईं घटनाओं को ही नहीं दर्शातीं, बल्कि यीशु के जीवनकाल की ओर मुड़कर भी देखती हैं और उसके पुनरागमन की आशा भी रखती हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक न केवल यीशु के भावी पुनरागमन को दर्शाती है, बल्कि उसके जीवन तथा उसके प्रस्थान के बाद के कलीसिया के इतिहास की ओर मुड़कर भी देखती है।

नए नियम के संक्षिप्त इतिहास, समान परिस्थितियों और एकमात्र वाचा द्वारा रचित धर्मवैज्ञानिक एकता व्यापक ऐतिहासिक अध्ययन को कठिन बना देती है। इसलिए बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने अपने अधिकाँश ध्यान को एक नई दिशा में लगाया है। इतिहास को परमेश्वर के नए नियम के वचन और कार्य प्रकाशनों को छोटे-छोटे खंडों में विभाजित करने की अपेक्षा, उन्होंने उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया है जिनमें नए नियम के लेखकों ने पूरी अवधि पर विभिन्न दृष्टिकोण प्रदान किए हैं।

वास्तव में, नया नियम हमें इस अवधि के पूरे इतिहास के कई भिन्न-भिन्न धर्मवैज्ञानिक आंकलनों को प्रदान करता है। उदाहरण के लिए ध्यान दें कि यीशु के जीवन का एक इतिहास चार भिन्न तरीकों से चार सुसमाचार लेखकों के द्वारा प्रस्तुत किया गया है : मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना। यद्यपि सुसमाचार के लेखक एक दूसरे के विरोधाभासी नहीं रहे हैं, फिर भी उनकी पुस्तकें मसीह के जीवन की ऐतिहासिक घटनाओं के विषय में काफी भिन्न दृष्टिकोणों को प्रदान करती हैं। वे चार भिन्न धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करती हैं। ऐसा ही कुछ प्रेरितों के काम की पुस्तक; पौलुस, पतरस, याकूब, यहून्ना और यहूदा की पत्रियों; और इब्रानियों तथा प्रकाशितवाक्य की पुस्तकों के विषय में कहा जा सकता है। वे सब नए नियम के पूरे प्रकाशन के भिन्न-भिन्न धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करती हैं। नए नियम के ये भाग एक दूसरे का विरोध नहीं करते, परंतु वे विभिन्न धर्मवैज्ञानिक शब्दावलियों, श्रेणियों और महत्वों को प्रदर्शित करते हैं।

इसी कारण, नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने अपनी अध्ययन पद्धति को एक ऐसी दिशा में लिया है जो बहुत फलदायक प्रमाणित हुई है। उन्होंने उन तरीकों की तुलना की है जिनमें नए नियम के विभिन्न लेखकों ने मसीह के जीवन के आरंभ से लेकर उसके आगमन तक की ऐतिहासिक अवधि की विशिष्ट धर्मवैज्ञानिक समझ प्रदान की है। वे ऐसे प्रश्न पूछते हैं : पौलुस ने नए नियम के इतिहास में परमेश्वर के सामर्थी कार्यों की व्याख्या कैसे की? लूका और यूहन्ना ने यह कैसे किया? उनमें क्या भिन्नताएँ थी? उनके साझे दृष्टिकोण कौनसे थे? इस दिशा ने नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों का कई महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियों की ओर मार्गदर्शन किया है।

अब जबकि हमने नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की रूपरेखा के एक सामान्य दिशा-निर्धारण को प्राप्त कर लिया है, इसलिए हमें इस अध्याय के अपने दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए, जो है युगांत-विज्ञान में विकास, अर्थात् अंतिम दिनों के विषय में बाइबल की शिक्षा। जैसा कि हम देखेंगे, कोई भी अन्य विषय उन रूपों में इस विषय से अधिक केंद्रीय नहीं है जिनमें बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने नए नियम के धर्मविज्ञान को देखा हो। परंतु यह समझने के लिए कि क्यों बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का महत्व इतना अधिक था, हमें यह समझना आवश्यक है कि अंतिम दिनों पर नए नियम के दृष्टिकोण आरंभिक दृष्टिकोणों से कैसे विकसित हुए।

युगांत-विज्ञान में विकास

हम तीन दिशाओं में देखेंगे। पहली, हम पारंपरिक युगांत-विज्ञान को स्पर्श करते हुए मंच तैयार करेंगे, अर्थात् उन तरीकों को देखेंगे जिनमें इस विषय का अध्ययन विधिवत धर्मविज्ञान में किया गया है। दूसरी, अंतिम दिनों के विषय में पुराने नियम के विकासों को देखने के लिए पुराने नियम के युगांत-विज्ञान का अध्ययन करेंगे। और तीसरी, हम नए नियम के आरंभिक समयों में युगांत-विज्ञान के दृष्टिकोणों की जाँच करेंगे। आइए पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में युगांत-विज्ञान को देखते हुए आरंभ करें।

पारंपरिक

शब्द "युगांत-विज्ञान" यूनानी विशेषण एस्खाटोस से आता है, जिसका सामान्यतः अर्थ "अंतिम," "अंतिम का," या "अंत" है। यह शब्द लगभग बावन बार नए नियम में, और साथ ही साथ बहुत बार पुराने नियम के यूनानी प्राचीन यूनानी अनुवाद, अर्थात् सेप्तुआजिन्त में प्रकट होता है। नए नियम में, शब्द एस्खाटोस कम से कम पंद्रह बार "अंतिम दिनों," "अंतिम बातों" या "अंत समयों" को दर्शाता है। और इसलिए, युगांत-विज्ञान एक ऐसा धर्मवैज्ञानिक तकनीकी शब्द है जिसका अर्थ "अंतिम दिनों, अंतिम बातों या अंत के समय की धर्मशिक्षा" है।

सदियों से, युगांत-विज्ञान पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान की एक मुख्य श्रेणी रहा है। विधिवत धर्मविज्ञानियों ने सामान्य रूप से पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं पर पाँच मुख्य श्रेणियों में विचार-विमर्श किया है : परमेश्वर-विज्ञान, मानव-विज्ञान, उद्धार-विज्ञान, कलीसिया-शास्त्र और अंततः युगांत-विज्ञान। विधिवत धर्मविज्ञान, और कई महत्वपूर्ण अंगीकारों और विश्वास-वचनों में युगांत-विज्ञान सामान्यतः अंतिम मुख्य विषय रहा है क्योंकि इसने प्राथमिक रूप से भविष्य की ओर, विशेषकर मसीह के पुनरागमन से जुड़ी घटनाओं पर ध्यान दिया है।

अब, सदियों में अधिकांश मसीहियों ने यह अनुभव किया है कि बाइबल अंत के समय के कुछ पहलुओं के विषय में बहुत ही स्पष्ट है। वे मसीह के महिमामय पुनरागमन, देह के पुनरुत्थान, और खोए हुए लोगों के दंड और मसीह में पाए जाने वाले लोगों के लिए अनंत जीवन मिलने के अंतिम न्याय के कुछ मूलभूत विषयों पर अपने हृदय से सहमत हैं। परंतु इन मूलभूत शिक्षाओं से परे, युगांत-विज्ञान के पारंपरिक विचार विमर्शों ने विश्वासियों के बीच कटु विभाजनों को उत्पन्न किया है। उदाहरण के लिए, सहस्त्राब्दी का विषय जो प्रकाशितवाक्य 20 की व्याख्या पर केंद्रित है, अर्थात् पृथ्वी पर मसीह के 1000-वर्ष के शासन के विषय में यूहन्ना की भविष्यद्वाणी। विश्वासयोग्य विश्वासियों ने सदियों से विभिन्न व्याख्यात्मक दृष्टिकोणों को अपनाया है : क्या यह अध्याय 1000-वर्ष के एक शाब्दिक शासन को दर्शाता है, या नहीं? क्या इससे पहले कुछ पहचाने जाने योग्य चिह्न होंगे? क्या यह पहले से ही आरंभ हो चुका है? अच्छी जानकारी रखने वाले मसीह के अनुयायियों ने विभिन्न तरीकों से इन प्रश्नों का उत्तर दिया है। उन्होंने युगांत-विज्ञान के प्रति बहुत से दिशा-निर्धारणों का अनुसरण किया है क्योंकि ऐसे विषयों पर बाइबल की शिक्षाएँ वर्तमान में स्पष्ट नहीं हैं।

यहीं पर नए नियम का बाइबल आधारित धर्मविज्ञान एक बड़ी प्रतिज्ञा को रखता है। बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने युगांत-विज्ञान का अध्ययन ऐसे तरीकों में किया है जो पारंपरिक वाद-विवाद की समानता में हैं। उन्होंने नई रणनीतियों को प्रस्तुत किया है और उन्होंने युगांत-विज्ञान की पारंपरिक समझ को नए विचार प्रदान किए हैं। और इसने सब तरह की युगांत-संबंधी समझ रखने वाले बहुत से मसीहियों को एक दूसरे के साथ गहरी एकता प्रदान की है।

यह समझने के लिए कि कैसे नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने अंतिम दिनों को ऐसे तरीकों में समझा है जो पारंपरिक दृष्टिकोणों से आगे बढ़ गए हैं, हमें पुराने नियम के युगांत-विज्ञान की पृष्ठभूमि के साथ परिचित होने की आवश्यकता है।

पुराना नियम

जैसा कि हमने इस पूरी श्रृंखला में देखा है, जब परमेश्वर ने स्वयं को कार्य और वचन प्रकाशनों के द्वारा प्रकट किया, तो उसने धर्मविज्ञान में विकास को उत्पन्न किया। युगांत-विज्ञान, अर्थात् जो बाइबल अंत की बातों के बारे में सिखाती है, ऐसे ऐतिहासिक विकासों से बचा हुआ नहीं था। अन्य विषयों के समान ही, अंतिम दिनों के विषय में पुराने नियम की शिक्षाएँ भी समय के साथ-साथ महत्वपूर्ण रूपों में

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विकसित हुईं। पुराने नियम के इन ऐतिहासिक विकासों ने उस मंच को तैयार कर दिया जिसे नए नियम के बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने युगांत-विज्ञान के विषय में नए नियम में भी खोजा है।

इस खंड में, हम संक्षेप में यह देखेंगे कि कैसे युगांत-विज्ञान पुराने नियम के उन मुख्य वाचाई प्रशासनों के साथ विकसित हुआ जिनका अध्ययन हमने इस श्रृंखला में किया है। आदम की वाचा के साथ आरंभ करते हुए हम क्रमानुसार नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद की वाचाओं को देखेंगे। इनमें से प्रत्येक चरण ने पुराने नियम के युगांत-विज्ञान के आधारभूत तत्वों में अपना योगदान दिया है।

आदम

बाइबल के इतिहास के आरंभ में ही परमेश्वर ने पुराने नियम के युगांत-विज्ञान के दो महत्वपूर्ण तत्वों को प्रकट किया। इनमें से पहला सृष्टि में ही अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देता है। मनुष्यजाति की रचना परमेश्वर के स्वरूप में की गई। और हमें पृथ्वी को भरने और इसे अपने अधीन कर लेने के द्वारा उसके राजकीय याजकों के रूप में कार्य करने के लिए बुलाया। सृष्टि के इन पहलुओं के द्वारा परमेश्वर ने प्रकट कर दिया कि इतिहास के लिए उसका लक्ष्य यह था कि पूरी पृथ्वी एक ऐसा स्थान बन जाए जहाँ उसकी महिमा उसके लोगों के साथ वास करे।

आदम और हव्वा के द्वारा पाप और उन पर पड़े श्राप के साथ, परमेश्वर ने पुराने नियम के युगांत-विज्ञान के दूसरे महत्वपूर्ण तत्व को प्रकट किया : अब से लोगों के दो प्रकार के समूह होंगे जो इस संसार पर नियंत्रण करने के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। उत्पत्ति 3:15 दर्शाता है कि स्त्री का वंश और साँप का वंश संसार पर नियंत्रण करने के लिए आपस में लड़ेंगे। स्त्री का वंश वे लोग हैं जो परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं, जबकि साँप का वंश वे लोग हैं जो शैतान के मार्गों का अनुसरण करते हैं। जब तक अंत समय नहीं आ जाता, ये दोनों समूह संसार पर नियंत्रण पाने के लिए लड़ते रहेंगे। परंतु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि अंततः विजय उसे और स्त्री के विश्वासयोग्य वंश को मिलेगी।

आदम के समय में ही बताए गए दोनों तत्वों को देख लेने के बाद, आइए हम अपने ध्यान को नूह की वाचा की ओर लगाएँ।

नूह

उत्पत्ति 7 के विश्वव्यापी जलप्रलय के बाद, परमेश्वर ने नूह के साथ एक वाचा बाँधी। इस वाचा ने प्रकृति की स्थिरता को सुरक्षित किया ताकि मनुष्य को तब प्रकृति के सर्वनाश का डर न हो जब वे संसार के लिए परमेश्वर की योजना को पूरा करने का प्रयास करते हैं। उत्पत्ति 8:22 में परमेश्वर ने कहा कि "अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी" तब तक ऋतुएँ, दिन और रात निरंतर चलते रहेंगे। इस प्रतिज्ञा के द्वारा उसने 'स्त्री के विश्वासयोग्य वंश' को आश्वस्त किया कि उनके पास उनके लिए रखे गए परमेश्वर के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु आवश्यक प्राकृतिक वातावरण होगा। पतन के कारण श्रापित की गई भूमि उनके विरुद्ध प्रबल न होगी। और वास्तव में, नूह की वाचा के द्वारा प्रदान की गई स्थिरता तब तक निरंतर चलती रहेगी जब तक इतिहास का लक्ष्य पूरा नहीं हो जाता। उस समय, प्रकृति के लिए एक नया वाचाई प्रबंध प्रभावी हो जाएगा।

आदम और नूह के साथ बाँधी गई सार्वभौमिक वाचाओं के दौरान इतिहास के अंत के मूल दर्शन को देख लेने के बाद, अब हमें पुराने नियम के युगांत-विज्ञान के उन मुख्य ऐतिहासिक विकासक्रमों की ओर मुड़ना चाहिए जो अब्राहम के दिनों में घटित हुए, वह ऐसा पहला व्यक्ति था जिसके साथ परमेश्वर ने एक राष्ट्रीय वाचा बाँधी थी।

अब्राहम

अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा का वर्णन उत्पत्ति 15 और 17 में पाया जाता है। परंतु उस वाचा के विषयों को पहले ही उत्पत्ति 12:1-3 में प्रस्तुत किया गया है। उन पदों में परमेश्वर ने पृथ्वी के सभी घरानों में से अब्राहम को एक ऐसा व्यक्ति बनाने के लिए अलग किया जिसके द्वारा परमेश्वर आदम और नूह से की गई अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करे। अब्राहम और उसके घराने को दी गईं आशीषें उनके द्वारा शेष जगत तक पहुँचनी थीं। वास्तव में, परमेश्वर ने इस्राएल को अदन की वाटिका में आदम और हव्वा को दी गई बुलाहट को पूरा करने में एक छोटे स्तर पर सफलता की प्रतिज्ञा की। अतः पुराने नियम का युगांत-विज्ञान अब्राहम और उसके घराने पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। इतिहास का अंतिम लक्ष्य उनके द्वारा पूरे संसार में पूरा किया जाएगा।

मूसा

अब हम हम उस दूसरी वाचा को देखने की स्थिति में हैं जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बाँधी थी, अर्थात् मूसा के साथ बाँधी गई वाचा। मूसा के दिनों में पुराने नियम का युगांत-विज्ञान और अधिक विकसित हुआ। मूसा की वाचा के अधीन युगांत-विज्ञान के ऐतिहासिक विकास अपेक्षाकृत जटिल हैं। इसलिए हम उनकी जाँच दो चरणों में करेंगे : पहला, निर्वासन का श्राप; और दूसरा, निर्वासन से पुनर्स्थापना की आशीष।

जैसा कि हम देख चुके हैं, मूसा की वाचा परमेश्वर की व्यवस्था पर ऐसे केंद्रित थी कि वह परमेश्वर के विश्वव्यापी राज्य को फैलाने में इस्राएल की विशेष सेवकाई की मार्गदर्शक है। इस्राएली यदि व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी रहते तो बहुत सी आशीषों की प्रतिज्ञा की गई थी, परंतु यदि वे मूसा की व्यवस्था से फिर जाते तो उन्हें बहुत से श्रापों की चेतावनी भी दी गई थी । वास्तव में, कई अनुच्छेदों में मूसा ने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि इस्राएल की भावी पीढ़ियाँ परमेश्वर के मार्गों से फिर जाएँगी। उसने उन्हें अवज्ञाकारिता के कई गंभीर परिणामों की चेतावनी दी थी, परंतु परमेश्वर की व्यवस्था का निरंतर सरेआम उल्लंघन करने के विरुद्ध दी गई उसकी सबसे बड़ी चेतावनी प्रतिज्ञा की भूमि से राष्ट्रीय निर्वासन होना था। सुनिए किस प्रकार मूसा ने इसे व्यवस्थाविवरण 4:27-28 में लिखा है :

> और यहोवा तुम को देश देश के लोगों में तितर बितर करेगा, और जिन जातियों के बीच यहोवा तुम को पहुँचाएगा उनमें तुम थोड़े ही से रह जाओगे। और वहाँ तुम मनुष्य के बनाए हुए लकड़ी और पत्थर के देवताओं की सेवा करोगे, जो न देखते, और न सुनते, और न खाते, और न सूँघते हैं। (व्यवस्थाविवरण 4:27-28)

इस्राएल के निर्वासन की चेतावनी न केवल इस्राएलियों के लिए एक भयानक बात थी, बल्कि पूरी मनुष्यजाति के लिए भी। याद करें कि अब्राहम के समय से ही, इतिहास के लिए परमेश्वर का लक्ष्य इस्राएल के द्वारा ही पूरा होना था। निर्वासन इस्राएलियों की सँख्या को बहुत कम कर देगा और उन्हें उनकी भूमि से हटा देगा, और इस प्रकार अब्राहम के साथ की गई प्रतिज्ञाओं तथा आदम और हव्वा की बुलाहट को पूरा करना बहुत कठिन बना देगा।

निर्वासन की नकारात्मक जटिलताओं को मन में रखते हुए, हमें अब निर्वासन से पुनर्स्थापना के विषय की ओर मुड़ना चाहिए जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा की थी। ख़ुशी के साथ, मूसा ने यह स्पष्ट कर दिया था कि इस्राएल के भावी निर्वासन के बावजूद भी परमेश्वर अपने विशेष लोगों के रूप में इस्राएल के प्रति हार नहीं मानेगा। व्यवस्थाविवरण 4:30-31 में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि जब इस्राएल अपने पापों से पश्चाताप करेगा और विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में परमेश्वर की ओर मुड़ेगा, तो वह उनकी सुनेगा और उन्हें उनकी भूमि पर पुनर्स्थापित करेगा। इससे भी बढ़कर, व्यवस्थाविवरण 30:5 में परमेश्वर ने इस पुनर्स्थापना में उन्हें संख्या और संपन्नता में पहले से अधिक बढ़ाने की प्रतिज्ञा की।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मूसा के युगांत-विज्ञान की एक मुख्य विशेषता वह रूप है जिसमें उसने इस्राएल के पश्चाताप और अपनी भूमि पर पुनर्स्थापना के इस समय का वर्णन किया है। सुनिए व्यवस्थाविवरण 4:30 में उसने क्या कहा।

> अंतिम दिनों में जब तुम संकट में पड़ो, और ये सब विपत्तियाँ तुम पर आ पड़ें, तब तुम अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो और उसकी मानना। (व्यवस्थाविवरण 4:30)।

मूसा का यह कथन पुराने नियम के युगांत-विज्ञान के ऐतिहासिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मूसा ने "अंतिम दिनों" के रूप में अनूदित शब्दावली का प्रयोग किया है। इस वाक्यांश को यूनानी पुराने नियम, सेप्तुआजिन्त में एस्खाटोस के रूप में अनूदित किया गया है और यह निर्वासन से इस्राएल की महिमामय वापसी के समय को चित्रित करता है। यहाँ मूसा द्वारा चुने गए शब्द वह आधार बन गए जिस पर पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं और नए नियम के लेखकों ने जगत के इतिहास के अंतिम चरण का वर्णन "अंत के दिनों," "अंतिम दिनों," या "एस्खाटोन" के रूप में किया। यहाँ से, निर्वासन से इस्राएल की वापसी ने युगांत-विज्ञान के विषय में बाइबल की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

दाऊद

अब हम युगांत-विज्ञान में हुए उन विकासक्रमों की ओर मुड़ने की स्थिति में हैं जो दाऊद की वाचा के समय के दौरान उत्पन्न हुए। इस अवधि के दौरान हुए विकास भी अपेक्षाकृत जटिल थे। इसलिए हम तीन चरणों में उनका अध्ययन करेंगे : पहला, एकीकृत राजतंत्र के दिन; दूसरा, इस्राएल के आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं का समय; और तीसरा, इस्राएल के बाद के भविष्यद्वक्ताओं का समय। आइए पहले इस बात पर ध्यान दें कि इस्राएल के एकीकृत राजतंत्र के समय में परमेश्वर के प्रकाशनों ने युगांत-विज्ञान को कैसे परिवर्तित किया।

जैसा कि हम इस श्रृंखला में देख चुके हैं, दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा ने विशेष रूप से इस्राएल के स्थाई राजवंश के रूप में दाऊद के घराने की स्थापना पर ध्यान केंद्रित किया। इस वाचा में, दाऊद के वंशजों और अपने मंदिर के साथ यरूशलेम ने अंत समयों के विषय में इसकी समझ सहित इस्राएल के पूरे धर्मविज्ञान में एक मुख्य भूमिका अदा की। यहाँ से, इतिहास का लक्ष्य यरूशलेम से शासन करने वाले दाऊद के राजकीय घराने की सफलता के साथ जुड़ा हुआ था। वास्तव में, भजन 72:8-11 में हम पाते हैं कि दाऊद का एक भावी पुत्र पूरी पृथ्वी पर राज्य करेगा।

> वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा। उसके सामने जंगल के रहनेवाले घुटने टेकेंगे, और उसके शत्रु मिट्टी चाटेंगे। तर्शीश और द्वीप द्वीप के राजा भेंट ले आएँगे, शेबा और सबा दोनों के राजा उपहार पहुँचाएँगे। सब राजा उसको दण्डवत् करेंगे, जाति जाति के लोग उसके अधीन हो जाएँगे। (भजन 72:8-11)

और भविष्य का यह दर्शन भजन 72:17-19 में और अधिक विस्तार से दर्शाया गया है।

> उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा; जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा, और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी। धन्य है यहोवा परमेश्वर, जो इस्राएल का परमेश्वर है; आश्चर्यकर्म केवल वही करता है। उसका महिमायुक्त नाम सर्वदा धन्य रहेगा; और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण होगी। आमीन फिर आमीन। (भजन 72:17-19)

यहाँ से, इतिहास का लक्ष्य यरूशलेम से शासन करने वाले दाऊद के राजकीय घराने की सफलता के साथ जुड़ा हुआ था।

अब हमें इस्राएल के आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं के वचनों की ओर मुड़ना चाहिए। इस्राएल के आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं ने मूसा की वाचा की सक्रियता को दाऊद की राजकीय वाचा में लागू किया। उन्होंने और भी अधिक स्पष्ट किया कि दाऊद के घराने की परिस्थितियाँ किस प्रकार अंतिम दिनों से संबंधित होंगी। आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं ने दाऊद के अविश्वासयोग्य पुत्रों को चेतावनी दी कि परमेश्वर अपनी व्यवस्था के सरेआम उल्लंघन को सहन नहीं करेगा, और यह कि परमेश्वर पूरे राष्ट्र को निर्वासन में भेजने को था। ये चेतावनियाँ अंततः 587 या 586 ई. पू. में बेबीलोन के समक्ष यरूशलेम के पतन के साथ पूरी हुईं।

फिर भी, इस्राएल को आश्वस्त करने के लिए कि उसकी पूरी आशा अभी खोई नहीं थी, इस्राएल के आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं ने भी अंतिम दिनों के आश्चर्यों और इस्राएल के निर्वासन से लौटने के बीच के मूसा के संबंध को याद किया। भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा की कि निर्वासन से पुनर्स्थापना में, दाऊद का एक महान पुत्र अपनी राजधानी यरूशलेम में, एक नई पद्धति का केंद्र बन जाएगा। सुनिए कैसे भविष्यद्वक्ता आमोस ने आमोस 9:11-12 में इसे कहा है :

> उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को खड़ा करूँगा, और उसके बाड़े के नाकों को सुधारूँगा, और उसके खण्डहरों को फिर बनाऊँगा, और जैसा वह प्राचीनकाल में था, उसको वैसा ही बना दूँगा; जिससे वे बचे हुए एदोमियों को वरन् सब जातियों को जो मेरी कहलाती हैं, अपने अधिकार में लें। **(आमोस 9:11-12)**

इन्हीं के समरूप यशायाह ने यशायाह 2:2 में इन शब्दों को लिखा :

> अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगे। **(यशायाह 2:2)**

आमोस ने घोषणा की कि दाऊद की “झोपड़ी” पुनर्स्थापित होगी ताकि पृथ्वी की सभी जातियाँ प्रभु का नाम लें, और यशायाह ने कहा कि “अंतिम दिनों” में, अर्थात् निर्वासन के बाद के दिनों में यरूशलेम इस पृथ्वी का सबसे महान नगर बन जाएगा और सभी जातियों के लोग उद्धार पाने के लिए उसके पास आएँगे। दाऊद के घराने और निर्वासन के बाद यरूशलेम की महिमा में ऐसी बड़ी आशाओं के साथ यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने इस्राएल को आश्वस्त किया कि निर्वासन केवल सत्तर वर्षों का ही होगा। यिर्मयाह 25:11 और 29:10 में भविष्द्वक्ता ने निर्वासन के सत्तर वर्षों के बारे में कहा, जो कि प्राचीन संसार में ईश्वरीय दंड के बारे में कहने का एक प्रचलित तरीका था। यिर्मयाह और अन्य आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं ने निरंतर घोषणा की कि अंतिम दिनों में, जब परमेश्वर के लोग निर्वासन से लौटेंगे, तो दाऊद के घराने और यरूशलेम को विश्वव्यापी महिमा मिलेगी।

इस्राएल के आरंभिक भविष्यद्वक्ताओं की सेवाकाइयों को आधार बनाते हुए, परमेश्वर ने अपने बाद के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा युगांत-विज्ञान में और अधिक ऐतिहासिक विकासक्रमों को प्रकट किया। इतिहास में परमेश्वर की सहभागिता ने अंतिम दिनों की पुराने नियम की अवधारणा में कम से कम दो मुख्य परिवर्तन किए। एक ओर, निर्वासन का समय इसलिए बढ़ाया गया क्योंकि निर्वासन में इस्राएलियों ने अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया। दानिय्येल 9 में दानिय्येल ने वर्णन किया कि निर्वासन के दौरान वह निर्वासन के सत्तर वर्षों की यिर्मयाह की भविष्यद्वाणियों को पढ़ रहा था, परंतु वह यह स्वीकार करने के लिए मजबूर हो गया कि इस्राएलियों ने निर्वासन में अभी तक अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया था। परंतु

फिर भी, उसने इस्राएल को अपनी भूमि पर लौटाने और यरूशलेम की पुनास्थापना करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की। जैसा कि हम आगे दानिय्येल 9 में पढ़ते हैं, स्वर्गदूत जिब्राईल ने परमेश्वर का उत्तर दानिय्येल तक पहुँचाया। इस्राएल के निर्वासन का अंत उस समय के अनुसार नहीं हुआ जो यिर्मयाह ने बताया था। क्योंकि परमेश्वर के लोग पश्चाताप करने में असफल रहे, इसलिए निर्वासन का समय सात गुणा बढ़ गया, अर्थात् वर्षों के सत्तर सप्ताहों तक। जैसा कि परमेश्वर ने लैव्यव्यवस्था 26 में ही स्थापित कर दिया था, वह निरंतर पाप में बने रहने का प्रत्युत्तर सात गुणा बड़े श्रापों में देगा। सरल रूप में कहें तो, दानिय्येल ने सीख लिया था कि परमेश्वर ने इस्राएल की महिमामय पुनस्र्थापना को लगभग 490 वर्षों तक टाल दिया था।

दूसरी ओर, बाद के भविष्यद्वक्ताओं ने भी यह प्रकट किया कि परमेश्वर ने अपने लोगों को निर्वासन के समय को कम करने का अवसर देने के द्वारा उन पर बड़ी दया दिखाई। 539 ई. पू. में परमेश्वर ने अनपेक्षित रूप में यिर्मयाह के माध्यम से आए अपने वचन को पूरा किया। उसने विजयी फारसी सम्राट कुस्रू को प्रेरित किया कि वह इस्राएल को यरूशलेम में परमेश्वर के मंदिर का पुनर्निर्माण करने के लिए छोड़ दे। इस समय एक छोटी संख्या में इस्राएली दाऊद के एक वंशज, जरूब्बाबेल की अगुवाई में प्रतिज्ञा की भूमि पर लौटे।

भविष्यद्वक्ता हाग्गै और जर्कयाह, तथा इतिहास के लेखक ने भी लौटने वाले इस छोटे समूह को उत्साहित किया कि वे यरूशलेम के पुर्ननिर्माण के द्वारा परमेश्वर की आशीषों में आगे बढ़ें। परंतु दुखद रूप में, एज्रा और नहेम्याह के समय तक पुनस्र्थापित समुदाय ने एक बार फिर से परमेश्वर की व्यवस्था का सरेआम उल्लंघन किया। अतः भविष्यद्वक्ता मलाकी ने घोषणा की कि इस्राएल की महिमामय युगांत-संबंधी आशाओं के आरंभ को भविष्य के किसी दूर के समय तक टाल दिया गया है, लगभग वैसे ही जैसे दानिय्येल ने उससे पहले समझ लिया था। पुराना नियम युगांत-संबंधी युग के इस दुखद स्थगन के साथ समाप्त होता है।

अतः हम देखते हैं कि पुराने नियम का युगांत-विज्ञान ऐतिहासिक रूप से विकसित हुआ है। यह आदम के दिनों में मौलिक रूप से आरंभ हुआ और फिर नूह के दिनों में और अधिक स्पष्ट हुआ। अब्राहम के समय में, इस्राएल द्वारा संसार को मिलने वाली आशीषें वे माध्यम बन गईं जिनके द्वारा परमेश्वर इतिहास को उसकी परम पूर्णता में लेकर आएगा। मूसा ने इस आशा को निर्वासन से इस्राएल की महिमामय वापसी के साथ जोड़ा। दाऊद के साथ बाँधी गई वाचा ने उसके राजवंश और यरूशलेम को निर्वासन के बाद के इन महिमामय अंतिम दिनों के केंद्र में रखा। और यद्यपि वहाँ पर आशा की एक छोटी सी अवधि थी जब कुछ इस्राएली बेबीलोन से प्रतिज्ञा की भूमि पर लौटे थे, परंतु इस्राएल के निरंतर विद्रोह के कारण पुराने नियम का अंत भविष्य के एक दूर के समय तक स्थगित एस्खाटोन की आशा के साथ हुआ।

पुराने नियम में हुए युगांत-विज्ञान के ऐतिहासिक विकासक्रमों को ध्यान में रखते हुए, अब हम यह देखने की स्थिति में हैं कि अंतिम दिनों की धर्मशिक्षा नए नियम के समयों में और अधिक कैसे विकसित हुई।

आरंभिक मसीही युगांत-विज्ञान

हम दो विषयों को स्पर्श करेंगे : पहला, अंतिम दिनों के विषय में पहली सदी के अधिकांश यहूदियों द्वारा रखे गए दृष्टिकोण; और दूसरा, यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु की सेवकाईयों में युगांत-विज्ञान का नाटकीय संशोधन।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पहली सदी का यहूदी धर्म

पहली सदी में पलिश्तीन के अधिकांश यहूदियों ने अंतिम दिनों के विषय में ऐसे दृष्टिकोण रखे जो पुराने नियम के दृष्टिकोणों के सदृश्य थे। जैसा कि भविष्यद्वक्ता दानिय्येल ने भविष्यद्वाणी की थी, इस्राएल ने सदियों तक अन्यजातियों के अत्याचार को सहा। बेबीलोनियों, मादियों और फारसियों, यूनानियों और अंततः रोमियों ने इस्राएल के निर्वासन को सैंकड़ों वर्षों तक बढ़ा दिया था।

इन सदियों के दौरान, विश्वासयोग्य यहूदियों ने अंतिम दिनों में इस्राएल की पुनर्स्थापना और महिमा की पुराने नियम की आशाओं की पूर्णता को देखने की लालसा की थी। कई रब्बियों ने इस आशा को इतिहास के द्विरूपी दृष्टिकोण में व्यक्त किया। एक ओर, उन्होंने अपनी वर्तमान परिस्थितियों का उल्लेख “इस युग” के रूप में किया। यह युग इस्राएल के इतिहास के उतार-चढ़ाव, यरूशलेम के नाश होने की निराशा और इस्राएल के लंबे निर्वासन से होते हुए आगे बढ़ा। भलाई पर बुराई की स्पष्ट विजय के कारण उन्होंने इस युग को अधिकांशतः नकरात्मक रूपों में चित्रित किया। यह असफलता, दुःख और मृत्यु का समय था।

दूसरी ओर, कई रब्बियों ने इतिहास की एक दूसरी अवधि, अर्थात् इस्राएल की भावी महिमा के समय, के बारे में भी बात की। उन्होंने भविष्य की इस समयावधि को “आने वाला युग” कहा। इतिहास का यह समय इस्राएल की आशीष और बुराई पर विजय पाने का अनंत युग होगा। उस समय, परमेश्वर अपने सभी निर्वासित लोगों को इकट्ठा करेगा, इस्राएल के अविश्वासयोग्य लोगों को दंड देगा, अन्यजातियों के दुष्ट लोगों को दंड देगा, यरूशलेम और उसके राजा को महिमान्वित करेगा, और अब्राहम की आशीषों को पृथ्वी की छोर तक फैलाएगा।

यीशु के जीवनकाल से पहले और दौरान के दशकों में पलिश्तीन के यहूदियों में कई धार्मिक समूह थे। ये समूह इस विषय पर भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण रखते थे कि इस युग और आने वाले युग के बीच परिवर्तन कैसे होगा। प्रकाशन-संबंधी समूह मानते थे कि एस्खाटोन अप्रत्याशित, विनाशकारी ईश्वरीय हस्तक्षेप के द्वारा आएगा। अन्य समूह, जिन्हें अक्सर जलोती कहा जाता है, मानते थे कि आने वाला युग तब उदय होगा जब यहूदी अपने रोमी शासकों के विरूद्ध सैन्य शक्ति के साथ उठ खड़े होंगे और अपने प्रयासों के लिए परमेश्वर की सहायता को देखेंगे। व्यवस्थावादी कहलाए जाने वाले समूह, जैसे फरीसी और सदूकी, मानते थे कि अंत के दिन तभी आएँगे जब इस्राएल मूसा की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्य प्रमाणित होगा।

यद्यपि इस युग से आने वाले युग में परिवर्तन के सटीक तरीके को लेकर काफी असहमति थी, फिर भी किसी न किसी रूप में अधिकांश यहूदियों का मानना था कि यह मसीहा के प्रकट होने के साथ होगा, जो पुराने नियम में प्रतिज्ञात दाऊद का महान पुत्र है। मसीहा संसार के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ लेकर आएगा, अर्थात् अंधकार के संसार से ज्योति, एक पराजित संसार से विजय, बुराई से भरे हुए संसार से धार्मिकता, मृत्यु के संसार से जीवन की ओर एक परम परिवर्तन को लाएगा।

यद्यपि यहूदियों द्वारा आम तौर पर रखे गए दृष्टिकोण पहली सदी में कुल मिलाकर पुराने नियम की शिक्षाओं के अनुरूप थे, फिर भी युगांत-विज्ञान के मुख्य ऐतिहासिक विकास ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु की सेवकाईयों में हुए।

यूहन्ना और यीशु

यूहन्ना बपतिस्मादाता और यीशु दोनों ने घोषणा की कि अंतिम दिनों में परमेश्वर के राज्य का आगमन निकट था। सुनिए किस प्रकार इस घोषणा का वर्णन मरकुस 1:15 में किया गया है :

> और कहा, “समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो।” (मरकुस 1:15)

वाक्यांश “परमेश्वर का राज्य” पुराने नियम में नहीं पाया जाता है, परंतु राज्य की यह घोषणा परमेश्वर के शासन और मूसा तथा भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा संबोधित किए गए “अंतिम दिनों,” या इस्राएल के निर्वासन की समाप्ति के बीच के संबंध से निकली है। सुनिए किस प्रकार यशायाह ने यशायाह 52:7-10 में निर्वासन के बाद परमेश्वर के शासन को दर्शाया :

> “तेरा परमेश्वर राज्य करता है।“ सुन, तेरे पहरुए पुकार रहे हैं, वे एक साथ जयजयकार कर रहे हैं; क्योंकि वे साक्षात् देख रहे हैं कि यहोवा सिय्योन को लौट रहा है . . . यहोवा ने सारी जातियों के सामने अपनी पवित्र भुजा प्रगट की है; और पृथ्वी के दूर दूर देशों के सब लोग हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार निश्चय देख लेंगे। (यशायाह 52:7-10)

यशायाह ने निर्वासन से लौटने का वर्णन एक ऐसे चित्र के साथ किया जिसमे परमेश्वर अपने लोगों की अगुवाई वापस यरूशलेम की ओर कर रहा है। यरूशलेम के खंडहरों को दिया गया शुभ संदेश यह था, “तेरा परमेश्वर राज्य करता है।” वास्तव में, यशायाह ने घोषणा की कि जब परमेश्वर अंतिम दिनों में अपने लोगों को पुनर्स्थापित करेगा, तो वह दर्शाएगा कि वह सभी जातियों और उसकी मूर्तियों पर जयवंत रूप में राज्य करता है।

एक भाव में, यूहन्ना बपतिस्मादाता का अंतिम दिनों का दृष्टिकोण उसके यहूदी समकालीन लोगों के दृष्टिकोण से बहुत मिलता-जुलता था। उसका मानना था कि इतिहास का अंतिम चरण, अर्थात् पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य, ऐसे मसीहा के द्वारा आएगा जो शीघ्रता से और निर्णायक रूप से कार्य करेगा, पापियों को दंड देगा, परमेश्वर के पश्चाताप किए हुए लोगों पर असीमित आशीषें उंडेलेगा। सुनिए उसने किस प्रकार लूका 3:9 में इसे लिखा है :

> अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर धरा है, इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है। (लूका 3:9)

हम यहाँ देखते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मादाता ने परमेश्वर के आने वाले राज्य को न केवल परमेश्वर के लोगों को मिलने वाली आशीषों के साथ जोड़ा, बल्कि परमेश्वर के शत्रुओं को मिलने वाले दंड के साथ भी।

फिर भी, यूहन्ना बपतिस्मादाता के अंतिम दिनों के दृष्टिकोणों ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण विकास को प्रस्तुत किया। वह यीशु को मसीहा, अर्थात् दाऊद के उस महान पुत्र के रूप में पहचानने के द्वारा जो अंतिम दिनों के परमेश्वर के राज्य को लाने वाला था, अपने यहूदी समकालीनों से आगे बढ़ा। परंतु यूहन्ना बपतिस्मादाता के साथ एक समस्या थी। जब यीशु की सेवकाई दंड और आशीषों के संपूर्ण प्रकटीकरण के बिना आरंभ हुई, तो यूहन्ना को संदेह हुआ कि क्या यीशु सचमुच मसीहा था या नहीं। लूका 7:20 में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मादाता ने अपने दो शिष्यों को यीशु के पास एक प्रश्न के साथ भेजा :

> यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट देखें?” (लूका 7:20)

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यूहन्ना ने यह प्रश्न पूछा। यीशु ने पुराने नियम की उन सब बातों को पूरा नहीं किया था, जिनके विषय में पहली सदी के यहूदियों और स्वयं यूहन्ना ने कहा था कि मसीहा करेगा।

परंतु अब सुनिए किस प्रकार यीशु ने लूका 7:22-23 में यूहन्ना बपतिस्मादाता को प्रत्युत्तर दिया :

> अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुरदे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। धन्य है वह जो मेरे विषय में ठोकर न खाए। (लूका 7:22-23)

इस अनुच्छेद में, यीशु ने निर्वासन के बाद के अंतिम दिनों में इस्राएल की पुनर्स्थापना के विषय में यशायाह की पुस्तक से कई भविष्यद्वाणियों का उल्लेख किया। इन बातों को दर्शाने के द्वारा, उसने इस तथ्य की पुष्टि की कि उसकी सेवकाई के कार्य और वचन प्रकाशनों ने दर्शाया कि वह अंतिम दिनों के विषय में पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को पूरा करने की प्रक्रिया में था।

परंतु यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मादाता और अन्य सब लोगों को यह चेतावनी भी दी कि कोई उसके "विषय में ठोकर न खाए।" यीशु ने यूहन्ना को उत्साहित किया कि वह इस कारण अपनी आशा को न खोए कि यीशु अंतिम दिनों के परमेश्वर के राज्य को कैसे पूरा कर रहा था। संक्षिप्त रूप में, यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मादाता से कहा, "मैंने परमेश्वर के राज्य की अंत के समय की अपेक्षाओं को पर्याप्त मात्रा में पूरा किया है कि तुम विश्वास करो कि शेष अपेक्षाओं को भी पूरा करूँगा।" इस अध्याय की शब्दावली में इसे ऐसे कहना उचित होगा, यीशु के शब्दों ने एक मुख्य ऐतिहासिक विकास का उल्लेख किया जो हो रहा था। अंतिम दिनों का पुराने नियम का दृष्टिकोण आदम से मलाकी तक के दिनों में नाटकीय तरीकों में परिवर्तित हुआ। और इसी प्रकार, यीशु के द्वारा परमेश्वर के प्रकाशन युगांत-विज्ञान के एक और परिवर्तन को ला रहे थे।

यीशु ने घोषणा की कि आने वाला युग अचानक से प्रकट नहीं होगा जैसी कि अपेक्षा की गई थी। इसकी अपेक्षा, एस्खाटोन समय की एक लंबी अवधि में पूरा होगा। मत्ती अध्याय 13-25 में राज्य से संबंधित उसके कई दृष्टांतों में यीशु ने स्पष्ट किया कि परमेश्वर का राज्य तीन चरणों में आएगा। यह एक छोटे रूप में उसके पहले आगमन के साथ आरंभ होगा, तब समय की एक अनिश्चित अवधि में बढ़ेगा, और अपनी पूर्णता तक केवल तभी पहुँचेगा जब उसका महिमा में पुनरागमन होगा। यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई अंतिम दिनों की कुछ आशीषों और दंड के साथ आने वाले युग का आरंभ करेगी। आने वाला युग इस युग के साथ एक निश्चित अवधि तक निरंतर जारी रहेगा जब मसीह स्वर्ग से शासन कर रहा होगा और उसकी कलीसिया बढ़ रही होगी। और तब मसीह के दूसरे आगमन पर आने वाला युग अपनी पूर्णता तक पहुँचेगा और पाप और मृत्यु के इस युग का अंत हो जाएगा।

बाइबल के धर्मविज्ञानी युगांत-विज्ञान के इस विकास को अक्सर कई रूपों में दर्शाते हैं। वे इसका वर्णन "पहले से ही, परंतु अभी नहीं," "अभी, परंतु अभी नहीं," और "युगों के परस्पर ढक लेने" के रूप में करते हैं। कभी-कभी वे इसे सामान्य रूप में "आरंभ हुआ युगांत" कहते हैं। शब्दावली चाहे जो भी हो, मूल विचार एक ही है।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं, पहली सदी के यहूदियों, और यहाँ तक कि यूहन्ना बपतिस्मादाता ने भी अंतिम दिनों के आगमन को करीब-करीब एकल ऐतिहासिक चरण के रूप में समझा था। यीशु ने भी अंतिम दिनों की ओर होने वाले परिवर्तन को इतिहास के अंतिम चरण के रूप में देखा, परंतु इस उपमा पर ध्यान दें : हम सब जानते हैं कि एक सामान्य मानवीय कदम को एक गति, एकल कदम के रूप में देखा जाता है। परंतु यदि हम इसे और अधिक निकटता से देखें, तो यह देखना कठिन नहीं है कि इसे कम से कम तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है : अपने पैर को जमीन से ऊपर उठाना, हवा में आगे बढाना और फिर अपने पैर को जमीन पर नीचे रखना। लगभग इसी तरह से, यीशु ने स्पष्ट किया कि अंतिम दिन या एस्खाटोन बढ़त के साथ आएगा। उसने घोषणा की कि इसका आरंभ उसके पहले आगमन पर हुआ था, कि यह समय की एक निश्चित अवधि तक निरंतर बढ़ता रहेगा, और यह अंततः उसके महिमामय पुनरागमन के समय पूर्णता में पहुँचेगा।

आदम से लेकर यीशु के समय तक बाइबल आधारित युगांत-विज्ञान ने किस प्रकार विकास किया, इसे ध्यान में रखते हुए, अब हम यह देखने की स्थिति में हैं कि बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने नए नियम के युगांत-विज्ञान को कैसे देखा है।

नए नियम का युगांत-विज्ञान

मसीह के आधुनिक अनुयायी होने के रूप में, हमने आधुनिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ मसीही विश्वास में प्रवेश किया। हम सब जीवन के ऐसे दृष्टिकोणों के साथ मसीह में आए जो नए नियम के लेखकों की पृष्ठभूमि से बहुत ही भिन्न हैं। और इन भिन्नताओं के कारण, हमें अक्सर उस विचारधारा, या दृष्टिकोण को समझने में बहुत ही कठिन परिश्रम करना होता है जिसने उस दृष्टिकोण को संचालित किया जिनमें नए नियम के लेखकों ने विश्वास को समझा था। यह बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का एक बहुत बड़ा लाभ है। यह कुछ ऐसे मूल दृष्टिकोणों को प्रकाश में लाया है जिसका उल्लेख नए नियम के लेखकों ने अपने मसीही विश्वास को व्यक्त करने के लिए बार-बार किया है।

यह समझने के लिए कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ने इन विषयों को कैसे देखा है, हम तीन बातों को देखेंगे। पहली, हम नए नियम में युगांत-विज्ञान के महत्व को स्पर्श करेंगे। दूसरा, हम एस्खाटोन की पूर्णता के रूप में मसीह या मसीह-विज्ञान की अवधारण की खोज करेंगे। और तीसरा, हम यह देखेंगे कि युगांत-विज्ञान ने नए नियम के उद्धार-विज्ञान, अर्थात् उद्धार की धर्मशिक्षा, को कैसे आकार दिया। आइए पहले युगांत-विज्ञान के महत्व को देखें।

महत्व

यद्यपि पहले-पहल यह अतिशयोक्ति जैसा लगे, परंतु यीशु का तीन-चरणीय युगांत-विज्ञान आरंभिक मसीहियों के मनों में इतना समाया हुआ था कि हम इसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नए नियम के प्रत्येक पृष्ठ पर पाते हैं। निस्संदेह, हम जानते हैं कि नया नियम अन्य कई सैद्धांतिक और व्यावहारिक विषयों को स्पर्श करता है। परंतु बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने यह दर्शाया है कि किसी न किसी तरह से नए नियम की प्रत्येक शिक्षा को अंतिम दिनों के विषय में यीशु के तीन-चरणीय दृष्टिकोण के द्वारा आकार दिया गया है।

पीढ़ियों से पलिश्तीन के अधिकाँश यहूदियों की लालसा थी कि मसीह अंतिम दिनों, अर्थात् विजय, उद्धार और अनंत जीवन के युग का आरंभ करे। लूका के संभावित अपवाद के साथ, नए नियम का प्रत्येक लेखक यहूदी था। और लूका सहित उनमें से प्रत्येक ने बड़ी गहनता के साथ यहूदी धर्मविज्ञान को क्रियान्वित किया। फलस्वरूप, मसीहा से संबंधित अंतिम दिनों के साथ यहूदी धर्मवैज्ञानिक संबंध ने नए नियम के लेखकों की धर्मवैज्ञानिक संरचना के प्रति महत्वपूर्ण रूपों में योगदान दिया है।

नए नियम के लिए युगांत-विज्ञान विशेष रूप में महत्वपूर्ण था क्योंकि अंतिम दिनों के विषय में यीशु की शिक्षा ने एक सबसे निर्णायक रूप को प्रस्तुत किया था जिसमें मसीहियों ने पहली सदी के यहूदी धर्म से नाता तोड़ लिया था। यहूदी धार्मिक अगुवों और सामान्य यहूदी लोगों ने मसीहा से संबंधित अंतिम दिनों के मसीही दृष्टिकोण के कारण ही मसीहियत के विरूद्ध रोष व्यक्त किया था। मसीहियों का मानना था कि मसीह पहले ही आ चुका है, परंतु एक ऐसे रूप में जो अनपेक्षित था। उसने यहूदियों और अन्यजातियों के हाथों दुःख उठाया और मारा गया; उसका पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण हुआ जहाँ से वह सब के ऊपर राज्य करता है; और एक दिन वह इस्राएल के अविश्वासियों सहित संपूर्ण मनुष्यजाति का न्याय करने के लिए वापस लौटेगा। मसीहा से संबंधित एक ऐसा परिदृश्य उसके बिलकुल विपरीत था

जिस पर उस समय के अधिकांश यहूदी विश्वास करते थे। और इन कारणों से, नए नियम के लेखक यीशु के तीन-चरणीय युगांत-विज्ञान से भरे हुए थे। और उनकी यह मानसिकता उनके द्वारा लिखी हर बात में दिखाई देती है।

नए नियम के लेखकों के लिए युगांत-विज्ञान कितना व्यापक था, यह देखने का एक सरल तरीका इस बात पर ध्यान देना है कि उन्होंने नए नियम की पूरी अवधि को ही "अंतिम दिन" कहा। पहला, नए नियम के लेखकों ने यीशु और उसके प्रेरितों के दिनों को "अंतिम दिन" या एस्खाटोन कहा, जैसा कि हम इब्रानियों 1:1-2 में देख सकते हैं।

> पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अंतिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है। **(इब्रानियों 1:1-2)**

यहाँ इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों के समय का उल्लेख "अंतिम दिनों" के रूप में किया। ऐसा करने के द्वारा उसका अर्थ यीशु के पुनरागमन से ठीक पहले के भावी समय से नहीं था, बल्कि वास्तव में यह था कि यीशु के द्वारा परमेश्वर ने अंतिम और निश्चित रूप से बात की है। यीशु के द्वारा राज्य के आरंभ के साथ ही पुराने नियम के प्रतिज्ञात अंतिम दिन पृथ्वी पर आ गए थे।

दूसरा, नए नियम के लेखकों ने 2 तीमुथियुस 3:1-5 जैसे स्थानों में कलीसिया के इतिहास की विस्तृत अवधि को अंतिम दिनों के रूप में निर्धारित किया है :

> पर यह स्मरण रख कि अंतिम दिनों में कठिन समय आएँगे। क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, दयारहित, क्षमारहित, दोष लगानेवाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी, विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन् सुखविलास ही के चाहनेवाले होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे, ऐसों से परे रहना। **(2 तीमुथियुस 3:1-5)**

पापों की वह सूची जिसके विषय में पौलुस ने कहा कि लोग "अंतिम दिनों" में करेंगे, वे सब ऐसे पाप थे जो पौलुस के दिनों में हो रहे थे, और उसने इन पापों के बारे में तीमुथियुस को चेतावनी दी थी। परंतु ये ऐसे पाप हैं जो पूरे इतिहास में होते आ रहे हैं और हमारे समय में भी हो रहे हैं। यह कि पौलुस किसी निकट भविष्य के समय की ओर संकेत नहीं कर रहा था, इसे "ऐसों से परे रहना" के उसके उपेदश में देखा जा सकता है। "अंतिम दिनों" के बुरे लोग तीमुथियुस के लिए खतरा थे क्योंकि यीशु के द्वारा "अंतिम दिन" पहले से ही इस संसार में आ चुके थे।

तीसरा, नए नियम के लेखकों ने मसीह के पुनरागमन के समय राज्य की पूर्णता का वर्णन "अंतिम दिनों" के रूप में किया है। हम इसे यूहन्ना 6:39 में देख सकते हैं :

> और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परंतु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ। **(यूहन्ना 6:39)**

यहाँ यीशु ने अपने शिष्यों को पिता के साथ अपने संबंध के बारे में सिखाया। "अंतिम दिनों" के विषय में उसका उल्लेख उस परम अंतिम दिन की ओर संकेत करता है जब वह महिमा में वापस आएगा, जब मृतक जी उठेंगे और परमेश्वर इस संसार का न्याय करेगा।

जैसे कि ये और कई अन्य अनुच्छेद दर्शाते हैं, नए नियम के लेखकों का मानना था कि यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के समय से लेकर महिमा में उसके पुनरागमन तक परमेश्वर की ओर से मिले सभी प्रकाशन अंतिम दिनों में घटित हुए हैं। उनकी शिक्षाओं को केवल यीशु के तीन-चरणीय युगांत-विज्ञान की संरचना में ही सही तरह से समझा और माना जा सकता है।

मसीह-विज्ञान

अब हम यह देखने की स्थिति में हैं कि नए नियम का मसीह-विज्ञान, या मसीह की धर्मशिक्षा, यीशु को इस्राएल की युगांत की आशाओं की पूर्णता के रूप में कैसे प्रस्तुत करता है। हम इस विषय को दो चरणों में देखेंगे। पहला, हम उन तरीकों को देखेंगे जिनमें विधिवत धर्मविज्ञान ने मसीह-विज्ञान के विषय के साथ व्यवहार किया है। और दूसरा हम यह देखेंगे कि बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने इस विषय को कैसे समझा है। आइए पहले विधिवत धर्मविज्ञान में मसीह-विज्ञान को देखें।

विधिवत धर्मविज्ञान

पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में मसीह-विज्ञान ने उन विषयों पर ध्यान दिया है जो कलीसिया के इतिहास की कुछ समयावधियों में बहुत महत्वपूर्ण थे। उदाहरण के लिए, विधिवत विज्ञानियों ने ऐसे विषयों पर ध्यान दिया है, जैसे मसीह का त्रिएकता के अन्य व्यक्तित्वों के साथ संबंध, मसीह के दो स्वभावों का उसके एक ही व्यक्तित्व में द्वितत्वी संयोजन, मसीह के निम्न बनने और ऊँचा उठाए जाने की अवस्थाएँ, उसके प्रायश्चित की प्रकृति, तथा भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा के रूप में मसीह के तीन कार्यभार। बिना किसी संदेह के, नया नियम इन और ऐसे कई विषयों को संबोधित करता है, और वे आज भी कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण विषय बने हुए हैं।

परंतु बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने मसीह-विज्ञान को एक अलग दिशा में लिया है। उन्होंने बल दिया है कि नए नियम के लेखकों ने मूल रूप से मसीह को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें पुराने नियम की आशा का हर पहलू पूरा होता है।

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान

बाइबल के धर्मविज्ञानी अक्सर उस समय की ओर संकेत करते हैं जब यीशु ने इम्माऊस के मार्ग पर अपने दो शिष्यों को पुराने नियम की व्याख्या में मसीह के महत्व को समझाने के लिए भेंट की। लूका 24:26-27 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> "क्या अवश्य न था कि मसीह ये दुःख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?" तब उसने [यीशु ने] मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरंभ करके सारे पवित्रशा स्त्र में से अपने विषय में लिखी बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया। (लूका 24:26-27)

यहाँ ध्यान दें कि यीशु ने स्पष्ट किया कि पुराने नियम ने उसके बारे में कैसे बात की। उसने अपने शिष्यों के समक्ष "मूसा और सारे भविष्यद्वक्ताओं," अर्थात् संपूर्ण पुराने नियम का उल्लेख किया, और "सारे पवित्रशा स्त्र में से अपने विषय में लिखी बातों का अर्थ" उन्हें दिखा दिया। बार-बार, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ने यह दर्शाया है कि नए नियम के लेखक यहाँ यीशु को पुराने नियम के युगांत-विज्ञान की पूर्णता के रूप में देखते हुए यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं।

नया नियम ऐसे कई तरीकों को दर्शाता है जिनमें यीशु ने अंतिम दिनों के विषय में भविष्यद्वाणियों को पूरा किया, परंतु भविष्यद्वाणियों की पूर्णता पर्याप्त रूप से मसीह के प्रति नए नियम के दृष्टिकोण को

व्यक्त नहीं करती हैं। इसकी अपेक्षा, हमें यह समझना होगा कि नए नियम की युगांत-संबंधी आशा यीशु के व्यक्तित्व पर केंद्रित थीं। यीशु नए नियम के युगांत-विज्ञान का केंद्र था।

एक पल के लिए हमारे पिछले अध्याय में पुराने नियम के प्रतीक विज्ञान के हमारे विचार-विमर्श को याद करें। पुराने नियम के इतिहास के प्रत्येक चरण पर मुख्य व्यक्ति, संस्थाएँ और घटनाएँ ऐसे रूपों में प्रकट हुए जिन्होंने उन लक्ष्यों की ओर संकेत किया जिसमें परमेश्वर इतिहास को आगे बढ़ा रहा था। वे उन बातों के प्राथमिक प्रदर्शन, पूर्वछाया, या प्रतीक थे जो इतिहास के अंत में पूरी तरह से पूर्णता को प्राप्त करेंगी। इसी कारण, क्योंकि यीशु ही मसीह था जिसके द्वारा परमेश्वर एस्खाटोन को लेकर आया, इसलिए नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के प्रतीकों की पूर्णता के रूप में मसीह के बारे में बात की।

आइए कुछ उदाहरणों का उल्लेख यहाँ करें, इतिहास के सबसे आरंभिक चरणों में परमेश्वर ने अपने राज्य के राजकीय याजक के रूप में संसार पर शासन करने के लिए आदम को बुलाने के द्वारा इस संसार को इसके परम लक्ष्य की ओर बढ़ाया; यीशु एक महान राजा और महायाजक के रूप में अंतिम दिनों में संसार पर मनुष्यजाति के शासन को पूरा करता है। परमेश्वर ने नूह को नियुक्त किया कि वह परमेश्वर के राज्य-संबंधी उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए मनुष्यजाति को परमेश्वर के दंड से बचाए; यीशु अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा एक ही बार में सदा के लिए एस्खाटोन में पूरा कर देता है। परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि उसके वंशज पृथ्वी के सारे परिवारों के लिए परमेश्वर की आशीषों को लाएँगे; यीशु अंततः इसे सुसमाचार के विस्तार के द्वारा अंतिम दिनों में लेकर आता है। परमेश्वर ने इस्राएल को अपनी व्यवस्था का प्रकाशन देने के लिए मूसा को खड़ा किया; यीशु एस्खाटोन में परमेश्वर के परम वचन को प्रकट करता है। परमेश्वर ने दाऊद से कहा कि उसका राजवंश परमेश्वर के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा और परमेश्वर की ओर से संसार पर शासन करेगा; यीशु इसे अंतिम दिनों में पूरा करता है। ये ऐसे कुछ उदाहरण हैं जो दर्शाते हैं कि नए नियम के लेखकों ने कैसे यीशु को पुराने नियम की आशाओं की पूर्णता के रूप में देखा।

अब हमें यह याद रखना आवश्यक है कि यीशु और नया नियम स्पष्ट करते हैं कि पुराने नियम की अपेक्षाओं की उसकी पूर्णता तीन चरणों में पूरी होगी : राज्य का आरंभ, निरंतरता और पूर्णता। इसी कारण, नए नियम के लेखकों ने अक्सर उन विभिन्न रूपों की ओर ध्यान आकर्षित किया जिनमें यीशु पुराने नियम की आशाओं को पूरा करता है। उदाहरण के लिए, यीशु ने पहले आदम की पृथ्वी पर की सेवकाई में शासन करने की आदम की बुलाहट को पूरा करना आरंभ किया। वह अब संसार पर अपने शासन को फैलाना निरंतर जारी रखता है। और जब वह महिमा में वापस आएगा तो सब बातों को नया बनाने के द्वारा सृष्टि के प्रत्येक भाग पर शासन करेगा।

यीशु ने अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई में परमेश्वर की सेवा में नूह द्वारा मनुष्यजाति के बचाव को पूरा किया, जब उसने पुरूष और स्त्रियों को पश्चाताप करने की बुलाहट दी और अपने शिष्यों को उन्हें बपतिस्मा देने का आदेश दिया। वह निरंतर ऐसा करना जारी रखता है जब कलीसिया पूरे संसार के लोगों को उद्धार और बपतिस्मा के लिए बुलाती है। और यीशु अंततः ईश्वरीय दंड से बचाएगा जब वह उन लोगों के लिए लौटेगा जिन्होंने विश्वासयोग्यता के साथ उसका अनुसरण किया है।

यीशु ने पूरे संसार के लिए आशीष बनने की अब्राहम की बुलाहट को भी पूरा किया। पहला, वह और उसके शिष्य अन्यजातियों तक पहुँचे। दूसरा, वह उद्धार की आशीष को पूरे संसार के लोगों तक पहुँचाने के द्वारा ऐसा करना निरंतर जारी रखता है। और तीसरा, वह परमेश्वर के राज्य के इस पहलू को तब पूरा करेगा जब वह प्रत्येक जाति और राष्ट्र से छुटकारा पाए हुए लोगों के साथ नई सृष्टि को भर देगा।

यीशु ने मूसा की व्यवस्था के मार्गदर्शन को भी पूरा किया जब उसने और उसके चेलों ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुष्टि की और नए प्रकाशन को लेकर आए। यीशु द्वारा अपने लोगों का मार्गदर्शन अब भी जारी है जब उसका आत्मा कलीसिया को पृथ्वी की छोर तक बाइबल की शिक्षाओं को फैलाने के लिए प्रशिक्षित करता है। और जब मसीह का पुनरागमन होगा, तो नई सृष्टि के प्रत्येक व्यक्ति के हृदयों पर परमेश्वर की व्यवस्था सिद्ध रूप से लिखी होगी।

अंततः यीशु ने दाऊद के घराने के लिए की गई विजय और विश्वव्यापी शासन की प्रतिज्ञा को भी पूरा किया। उसने इसे पहले अपनी मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के द्वारा शैतान पर विजय पाने के साथ पूरा किया। उसकी कलीसिया सुसमाचार के द्वारा संसार पर मसीह की आत्मिक विजय को फ़ैलाना जारी रखती है। और जब मसीह का पुनरागमन होगा, तो वह परमेश्वर के सारे शत्रुओं को दंड देगा और दाऊद के महान पुत्र के रूप में पूरी सृष्टि पर राज्य करेगा।

ये उदाहरण हमें एक ऐसी संरचना प्रदान करते हैं जिसमें से हम ऐसे कई विशेष तरीकों को समझ सकते हैं जिनमें नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम की आशाओं की पूर्णता के रूप में मसीह पर ध्यान केंद्रित किया। मसीह अंतिम दिनों के तीन चरणों में पुराने नियम के युगांत-विज्ञान की प्रत्येक आशा के पूर्ण प्रकटीकरण को व्यक्तिगत रूप में लेकर आता है।

उद्धार-विज्ञान

बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने अक्सर उद्धार की धर्मशिक्षा या उद्धार-विज्ञान को नए तरीकों में समझा है। हमारे कहने का अर्थ क्या है, यह देखने के लिए हम इस विषय को पहले पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में उद्धार-विज्ञान को स्पर्श करते हुए देखेंगे। और फिर हम देखेंगे कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में इस धर्मशिक्षा के साथ कैसा व्यवहार किया गया है। आइए पहले विधिवत धर्मविज्ञान में उद्धार-विज्ञान पर ध्यान दें।

विधिवत धर्मविज्ञान

विशाल भाव में, पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञानियों ने उद्धार की धर्मशिक्षा को दो मूल श्रेणियों में विभाजित किया है : हिस्टोरिया साल्यूटिस या उद्धार का इतिहास, और ओर्डो साल्यूटिस, या उद्धार का क्रम। उद्धार का इतिहास उन तरीकों को दर्शाता है जिनमें परमेश्वर ने उद्धार को विषयपरक इतिहास में पूरा किया है। उद्धार का क्रम अलग-अलग लोगों पर उद्धार के आत्मपरक प्रयोग को दर्शाता है।

विधिवत धर्मविज्ञान में, उद्धार की पूर्णता, या हिस्टोरिया साल्यूटिस को मसीह की पृथ्वी पर की सेवकाई में परमेश्वर द्वारा पूरे किए गए कार्य के सार के रूप में अपेक्षाकृत संक्षिप्त भाव में परिभाषित किया है। मसीह के प्रायश्चित पर बहुत अधिक ध्यान दिया गया है। मसीह किसके लिए मरा? वह हमारे लिए क्यों मरा? उसकी मृत्यु ने क्या पूरा किया? हाल ही के दशकों में मसीह के पुनरूत्थान पर अधिक ध्यान दिया गया है। मसीह मृतकों में से क्यों जी उठा? उसके नए जीवन का हमारे उद्धार से क्या संबंध है? विधिवत धर्मविज्ञानी भी मसीह के स्वर्गारोहण और स्वर्ग में उसके सिंहासन पर विराजमान होने के विषय में बात करते हैं, और कैसे उसका वर्तमान शासन उस पर विश्वास करने वालों को प्रभावित करता है। और वे युगांत-विज्ञान के शीर्षक तले महिमा में मसीह के पुनरागमन के बारे में भी बात करते हैं। परंतु इन मुख्य विचार-विमर्शों के अतिरिक्त विधिवत धर्मविज्ञानियों ने उद्धार की विषयपरक परिपूर्णता पर अधिक ध्यान नहीं दिया है।

इसकी अपेक्षा, विधिवत विज्ञानियों ने अपने ध्यान को उद्धार के प्रयोग, या ओर्डो साल्यूटिस पर अधिक लगाया है। इस महत्व ने इस बात पर बल देने के द्वारा अधिकांश मसीहियों के लिए राह को तैयार किया है कि लोगों के जीवनों में उद्धार को कैसे लागू किया जाना है। आज भी जब हम नया जीवन, पश्चाताप, विश्वास, धर्मी ठहराया जाना, पवित्रीकरण और महिमान्वित करना जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, तो हमारे ध्यान में सामान्यतः लोगों के जीवनों में उद्धार को लागू करने के विशिष्ट पहलू होते हैं। कलीसिया की लगभग प्रत्येक शाखा की धर्मवैज्ञानिक शब्दावली में नया जीवन उस नए जन्म को दर्शाता है जिसका अनुभव लोग उस समय करते हैं जब आरंभ में उद्धार को उन पर लागू किया जाता है। पश्चाताप एक व्यक्ति का पाप से फिरकर मसीह की ओर आना है। विश्वास एक व्यक्ति का उद्धार के लिए मसीह में

परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा और निर्भरता है। धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर द्वारा एक व्यक्ति के विषय में यह न्यायिक घोषणा करना है कि उसे प्रदान की गई धार्मिकता केवल विश्वास के माध्यम से प्राप्त की गई है। शब्द पवित्रीकरण सामान्यतः एक व्यक्ति के पवित्रता में बढ़ने को दर्शाता है। और महिमान्वित करना एक व्यक्ति पर उद्धार को पूरी तरह से लागू करना, अर्थात् अनंत जीवन का पुरस्कार है।

हममें से कई उन तरीकों से परिचित हैं जिनमें उद्धार-विज्ञान के इन या अन्य पहलूओं की चर्चा विधिवत धर्मविज्ञान में की जाती है। परंतु नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ने उद्धार की धर्मशिक्षा को एक भिन्न दृष्टिकोण से देखा है : ऐसे दृष्टिकोण जो यीशु के तीन-चरणीय युगांत-विज्ञान से निकले हैं।

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान

विधिवत धर्मविज्ञानियों के विपरीत, बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने उद्धार की पूर्णता, हिस्टोरिया साल्यूटिस पर अधिक ध्यान दिया है। उन्होंने दिखाया है कि नए नियम में लोगों पर उद्धार के लागू किए जाने को सदैव यीशु के युगांत-विज्ञान के तीन चरणों की संरचना, अर्थात् उसमें उद्धार की ऐतिहासिक पूर्णता, में समझा गया है।

नए नियम के उद्धार-विज्ञान की कल्पना नाटय मंच के रूप में करें। बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के दृष्टिकोण से, मसीह में उद्धार की पूर्णता मंच की पृष्ठभूमि की रचना करती है। इस पृष्ठभूमि के तीन विस्तृत खंड हैं जो अंतिम दिनों के आरंभ, निरंतरता और पूर्णता को प्रस्तुत करते हैं। एक व्यक्ति के जीवन में उद्धार को लागू करना मंच के सबसे आगे के स्थान के निकट खड़े पात्र के अभिनय के समान है। नए नियम के लेखकों ने वर्णन किया है कि तब क्या होता है जब उद्धार किसी व्यक्ति के जीवन में आता है, जैसे कि वे श्रोताओं के बैठने की तीन अलग-अलग जगहों से मंच की ओर देख रहे हों। वे एक व्यक्ति के उद्धार के अनुभव को पृष्ठभूमि के उन तीन खंडों में से देखते हैं जो अंतिम दिनों के आरंभ, निरंतरता और पूर्णता को प्रस्तुत करते हैं।

पहले दृष्टिकोण से, मसीह का एक अनुयायी अपने उद्धार को उसके साथ जोड़े जाने पर आधारित करता है जिसे मसीह ने अंतिम दिनों के आरंभ के दौरान पूरा किया था। दूसरे दृष्टिकोण से, मसीह का एक अनुयायी अपने जीवनकाल में उसके साथ जोड़े जाने के द्वारा उद्धार का अनुभव करता है जो मसीह अंतिम दिनों की निरंतरता के दौरान पूरा कर रहा है। और तीसरे दृष्टिकोण से, मसीह के अनुयायी तब उद्धार का अनुभव प्राप्त करेंगे जब वे उसके साथ जोड़े जाएँगे जो मसीह अंतिम दिनों की पूर्णता के समय पूरा करेगा।

अधिकतर यह देखना सरल होता है कि इसी तरह से नए नियम के लेखकों ने उद्धार की पूर्णता को उद्धार को लागू किए जाने के साथ जोड़ा है। उदाहरण के लिए, प्रेरित पौलुस ने उद्धार शब्द का प्रयोग तीन आधारभूत रूपों में किया है। कई बार उसने इसके बारे में पहले दृष्टिकोण से कहा है, जैसे कि कोई ऐसी घटना जो पहले ही हो चुकी हो। उदाहरण के लिए, हम रोमियों 8:24 में इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **इस आशा के द्वारा हमारा उद्धार हुआ है। (रोमियों 8:24)**

यहाँ पौलुस ने पवित्र आत्मा के द्वारा इसलिए नया जीवन पाने और जीवन की नई राह पर चलाने के हमारे अतीत के अनुभव के बारे में बात की क्योंकि हम उसके साथ जोड़े गए थे जो मसीह ने 2000 वर्षों पहले पूरा किया था।

अन्य समयों पर, पौलुस ने उद्धार के विषय में विश्वासियों के अनुभव में वर्तमान, निरंतर चलने वाली वास्तविकता के रूप में दूसरे दृष्टिकोण से बात की। जैसा कि उसने 1 कुरिन्थियों 1:18 में लिखा :

> **क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परंतु हम उद्धार पानेवालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है। (1 कुरिन्थियों 1:18)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहाँ पौलुस ने मसीह में हमारे प्रतिदिन निरंतर चलने वाले उद्धार के बारे में बात की, जो कि निश्चित रूप से उस पर आधारित है जो मसीह ने राज्य के आरंभ में किया था, परंतु साथ ही यह उसकी वर्तमान स्वर्गीय सेवकाई में उसके साथ हमारे संयोजन से निकटता के साथ जुड़ा हुआ है।

अन्य समयों पर, पौलुस ने तीसरे दृष्टिकोण से उद्धार के बारे में ऐसे बात की कि वह अभी भविष्य की बात है, एक ऐसी घटना है जो मसीह के पुनरागमन के समय होनी बाकी है। जैसा कि उसने रोमियों 5:9 में कहा:

> अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? (रोमियों 5:9)

केवल एक महत्वपूर्ण उदाहरण पर ध्यान दें। ओर्डो साल्यूटिस के अंतिम पहलू को सामान्य तौर पर "महिमान्वित करने" के रूप में जाना जाता है। हम इस शब्द का प्रयोग सामान्यतः उस संदर्भ में करते हैं जो लोगों के साथ तब होगा जब मसीह का पुनरागमन होगा। परंतु बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने देखा है कि हम नए नियम में महिमान्वित करने की अवधारणा को काट-छांट देते हैं, यदि हम इसे केवल इस बात तक सीमित कर देते हैं जो मसीह के पुनरागमन की पूर्णता में होगा। उदाहरण के लिए, पौलुस ने अंतिम दिनों के सभी तीन चरणों के आधार पर महिमान्वित किए जाने के बारे में लिखा है। पहला, उसने इसके विषय में ऐसे बात की जैसे यह विश्वासियों के साथ पहले से ही घटित हो चुका है। सुनिए उसने रोमियों 8:29-30 में क्या लिखा :

> क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है। (रोमियों 8:29-30)

"महिमा भी दी" के रूप में अनूदित क्रिया एडोक्सासेन है और क्रिया का यह रूप एक ऐसी घटना की ओर संकेत करता है जो पहले ही हो चुकी थी। क्योंकि मसीह में लोग उसके पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण में मसीह के महिमान्वित होने में जुड़े हुए हैं, इसलिए उन्होंने उसके साथ महिमान्वित होने के एक अंश को पहले से प्राप्त कर लिया है। विश्वासी मसीह में पहले से महिमा प्राप्त कर चुके हैं।

इसके अतिरिक्त, पौलुस ने यह भी दर्शाया कि विश्वासयोग्य विश्वासियों के लिए महिमा प्राप्त करना एक निरंतर चलने वाली वास्तविकता है। मसीह के साथ जुड़े रहने के जीवन के प्रतिदिन के अनुभव को महिमा प्राप्त करने के रूप में भी कहा जा सकता है। जैसे कि 2 कुरिन्थियों 3:18 में पौलुस ने अपने और अपने साथियों के बारे में लिखा है :

> परंतु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं। (2 कुरिन्थियों 3:18)

"तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके" के रूप में अनूदित वाक्यांश अपो डोक्सेस ऐइस डोक्सान है जिसे और अधिक अक्षरशः रूप में ऐसे अनुवाद किया जा सकता है, "महिमा से महिमा तक।" यहाँ पर प्रेरित पौलुस ने यह तर्क दिया है कि मसीह की सेवा करने का मसीही जीवन विश्वासी के लिए और अधिक महिमा को प्राप्त करना है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और निस्संदेह, पौलुस ने महिमा प्राप्त करने के विषय में ऐसे बात की जैसे कि यह भविष्य की घटना है। विधिवत धर्मविज्ञानियों के समान ही, पौलुस समझ गया था कि मसीह के अनुयायी तब परम महिमा को प्राप्त करेंगे जब मसीह वापस आएगा। जैसा कि हम 2 तीमुथियुस 2:10 में पढ़ते हैं :

> इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूँ, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है अनन्त महिमा के साथ पाएँ। (2 तीमुथियुस 2:10)

लगभग इसी तरह से, बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने यह दर्शाया है कि नए नियम के लेखकों ने यीशु के युगांत-विज्ञान के तीन चरणों के आधार पर इतना अधिक विचार किया है कि उन्होंने उद्धार-विज्ञान के प्रत्येक पहलू के साथ इस त्रि-रूपीय तरीके से व्यवहार किया है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान की रूपरेखा का परिचय दिया है। हमने पुराने नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान के साथ इसकी तुलना करने के द्वारा इस अध्ययन-पद्धति के प्रति एक दिशा-निर्धारण को प्राप्त किया है। हमने ऐसे विकासक्रमों में नए नियम के धर्मविज्ञान के अग्रभागों को देखा है जिन्होंने अंतिम दिनों के विषय में यीशु की शिक्षाओं को प्रेरित किया। और हमने यह भी खोज की है कि बाइबल के धर्मविज्ञानियों ने नए नियम के संपूर्ण धर्मविज्ञान की संचालक संरचना के रूप में कैसे यीशु के तीन-चरणीय युगांत-विज्ञान के साथ व्यवहार किया है।

नए नियम के बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ने कई भिन्न-भिन्न रूपों में यीशु और उसके प्रेरितों की शिक्षाओं के विषय में हमारी समझ को बढ़ाने में हमारी सहायता की है। परंतु सबसे बढ़कर, बाइबल आधारित धर्मविज्ञान ने हमें दिखाया है कि हमें उस प्रकाश में मसीह के लिए कैसे जीना है जो उसने अपने पहले आगमन में पहले से ही पूरा कर लिया है, हमें अब अपने भीतर वास करने वाले उसके आत्मा के सामर्थ्य में मसीह के लिए कैसे जीना है, और हमें उसके महिमामय पुनरागमन की आशा में मसीह के लिए कैसे जीना है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।